INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

HPSC – HCS

HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 4

भारत और विश्व का भूगोल + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**HPSC-HCS (Haryana Public Service Commission – Haryana Civil Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**HPSC-HCS**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/wdvcfu

Online Order करें - https://bit.ly/40yVhHP

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

भारत का भूगोल		
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	सामान्य परिचय	1-2
2.	भारत की भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार • पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार • पड़ोसी देशों के साथ भारत का सीमा विस्तार व सीमा संबंधी विवाद	2-10
3.	भारत में प्रमुख भौतिक भू – आकृतियाँ • पर्वत • मैदान • पठार • द्वीप समूह	10-34
4.	भारत की जलवायु • भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक • भारतीय जलवायु की विशेषताएँ	35-48
5.	भारत की अपवाह प्रणाली • अपवाह प्रवृत्ति • हिमालयी अपवाह तंत्र • प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र • भारत में नदियों का महत्व • भारत की प्रमुख झीलें • मृदा • भारत में मृदा संबंधित समस्याएँ • मृदा संरक्षण के उपाय	48-69
6.	भारत में वन संसाधन • वन	69-77

	• भारत में पायी जाने वाली वनस्पति • वनस्पति के विकास को प्रभावित करने वाले कारक • वनोंन्मूलन • सामाजिक वानिकी	
7.	भारत में कृषि की स्थिति • कृषि के प्रकार • प्रमुख फसलें • जल संसाधन • जल संरक्षण के उपाय • राष्ट्रीय जल नीति	77-89
8.	भारत के प्रमुख खनिज संसाधन • भारत में खनिजों का वितरण	90-95
9.	भारत में ऊर्जा संसाधन • ऊर्जा के स्त्रोत • ऊर्जा से संबंधित प्रमुख योजनाएँ	95-102
10.	भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र • नई औद्योगिक नीति, 1991 • भारत के प्रमुख उद्योग • भारत के औद्योगिक प्रदेश	102-115
11.	भारत में परिवहन	115-125
12.	जनसंख्या – 2011 • भारत की जनगणना	125-130
	विश्व भूगोल	
1.	पृथ्वी की संरचना • पृथ्वी की आंतरिक संरचना • पृथ्वी के कोर में जेट स्ट्रीम	130-136

	• पृथ्वी की आंतरिक संरचना के बारे में विभिन्न परिकल्पनाएं • भूवैज्ञानिक समय सारणी	
2.	पृथ्वी की प्रमुख स्थलाकृतियाँ	136-148
3.	वैश्विक अपवाह तंत्र • नदियाँ • विश्व की प्रमुख झीलें • विश्व के प्रमुख जल – प्रपात • विश्व के प्रमुख जलडमरूमध्य • विश्व की प्रमुख जलसंधियाँ	148-153
4.	विश्व में भूकंप एवं ज्वालामुखी का वितरण • भूकंप • भूकंप का विश्व वितरण • ज्वालामुखी • विश्व के प्रमुख द्वीप • महाद्वीप • विश्व के प्रमुख जलमार्ग	154-172
5.	वैश्विक कृषि एवं इसके प्रकार • कृषि के प्रकार • विश्व की प्रमुख फसलें	172-177
6.	विश्व के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश • उद्योगों का वर्गीकरण • विश्व के प्रमुख उद्योग • विश्व के प्रमुख औद्योगिक नगर	178-183
7.	पर्यावरणीय स्थिति • पारिस्थितिक विज्ञान अध्ययन के विभिन्न स्तर • पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यक्षमता	184-203

	• खाद्य श्रृंखला एवं खाद्य जाल • पर्यावरणीय समस्याएं एवं मुद्दे • वनोन्मूलन • वनोन्मूलन के परिणाम • जलवायु परिवर्तन	
8.	विश्व की प्रमुख भू-राजनीतिक समस्याएं • बदलता भू-परिदृश्य	203-207
	अर्थशास्त्र	
1.	अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय • अर्थशास्त्र की शाखाएँ • अर्थव्यवस्था के प्रकार • अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक	208-212
2.	राष्ट्रीय आय • शुद्ध घरेलू उत्पाद • राष्ट्रीय आय की माप • हरित राष्ट्रीय आय • राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग • भारत में राष्ट्रीय आय का वितरण	212-219
3.	बैंकिंग अध्ययन • भारत में बैंकिंग • बैंकों के राष्ट्रीयकरण का इतिहास • भारत में बैंकों का वर्गीकरण • भारत में भुगतान प्रणाली • वित्तीय समावेशन • भारत की राष्ट्रीय मुद्रा	220-241
4.	लोक वित्त	241-246

	• लोक वित्त का महत्व • राजकोषीय नीति • वित्त आयोग	
5.	वस्तु एवं सेवा कर (GST) • GST के प्रकार • GST का आम लोगों पर प्रभाव	246-250
6.	सब्सिडी एवं लोक वितरण प्रणाली • सब्सिडी • सब्सिडी प्रकार • राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम • भारतीय खाद्य निगम	251-258
7.	केंद्र - राज्य वित्तीय संबंध • केंद्र राज्य वित्तीय संबंधों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान • हॉरिजेंटल वितरण मापदंड • वन और पारिस्थितिकी	259-263
8.	बजट • बजट के प्रकार • भारत का बजटीय इतिहास • बजट निर्माणकारी एजेंसियाँ • बजट निर्माण प्रक्रिया • बजट से संबंधित वैधानिक कोष • बजट 2023-24	263-273
9.	संवृद्धि एवं विकास • आर्थिक विकास • आर्थिक संवृद्धि • मानव विकास रिपोर्ट-2019	274-275

10.	राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ • राजकोषीय नीति की परिभाषा • मौद्रिक नीति की परिभाषा	276-278
11.	मुद्रास्फीति – अवधारणा, प्रभाव एवं नियंत्रण तंत्र • मुद्रास्फीति के प्रकार • मुद्रास्फीति की गणना • मुद्रास्फिति के कारण • मांग और पूर्ति प्रबंधन	279-289
12.	ई-कॉमर्स • ई-कॉमर्स का इतिहास • ई-कॉमर्स का प्रकार • ई-कॉमर्स के फायदें	290-294
13.	आर्थिक विकास में सरकार की भूमिका • नीति आयोग द्वारा विभिन्न कार्यक्रम	295-298
14.	मानव संसाधन एवं आर्थिक विकास • मानव विकास सूचकांक • मानव विकास रिपोर्ट • वैश्विक खुशहाली रिपोर्ट 2022 • वैश्विक भुखमरी सूचकांक	299-302
15.	सामाजिक क्षेत्र • गरीबी • बेरोजगारी एवं असमानता • स्वास्थ्य सेवा नई शिक्षा नीति	303-319
16.	आर्थिक समस्याएं एवं सरकार की पहलें • भारत में पंचवर्षीय योजना	320-326

	• पंचवर्षीय योजनाओं का अवलोकन • योजना आयोग का इण्डिया विजन, 2020	
17.	केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाएँ	326-330
18.	सतत् विकास एवं जलवायु परिवर्तन • सतत् विकास लक्ष्य • जलवायु परिवर्तन के प्रभाव • जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु वैश्विक प्रयास जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना	330-333
19.	कृषि • प्रमुख फसलें • सिंचाई • सिंचाई परियोजना • खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र एवं खाद्य प्रबंधन • खाद्य सुरक्षा एवं खाद्य प्रबंधन • कृषिगत सुधार • भारतीय कृषि के समक्ष चुनौतियाँ	334-355
20.	औद्योगिक क्षेत्र की प्रवृत्तियां • औद्योगिक नीति • भारत में औद्योगिक नीति का विकास • औद्योगिक नीति, 1948, 1956, 1991 • औद्योगिक वित्त • प्रमुख उद्योग • आर्थिक सुधार • अवसरंचना एवं आर्थिक वृद्धि • मानव विकास रिपोर्ट	356-374

भारत का भूगोल

अध्याय – 1

सामान्य परिचय

- **अर्थ एवं परिभाषा :-** "ज्योग्राफी" (Geography) अंग्रेजी भाषा का शब्द है , जो ग्रीक (यूनानी) भाषा में **'ज्योग्राफिया '** (Geographia) शब्दावली से प्रेरित है । इसका शाब्दिक अर्थ "पृथ्वी का वर्णन करना है।"
- ज्योग्राफिया शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग यूनानी विद्वान **'इरैटॉस्थनीज'** (Eratosthenes 276-194 ई . पू .) ने किया था , इसके पश्चात विश्व स्तर पर इस पृथ्वी के विज्ञान विषय को ज्योग्राफी (भूगोल) नाम से जाना जाने लगा ।
- यूनानी एवं रोमन अधिकांश विज्ञानों ने पृथ्वी को 'चपटा' या 'तस्तरीनुमा' माना, जबकि भारतीय साहित्य में पृथ्वी एवं अन्य आकाशीय पिण्डों को हमेशा ' गोलाकार ' मान कर वर्णन किया। इसलिए इस विज्ञान को 'भूगोल' के नाम से जाना जाता है।
- भूगोल 'पृथ्वी तल' या भू तल (Earthsurface) का विज्ञान है। इसमें स्थान (Space) व उसके विविध लक्षणों (Variable Characters), वितरणों (Distributions) तथा स्थानिक सम्बंधों (Spatial Relations) का मानवीय संसार (World of man) के रूप में अध्ययन किया जाता है।
- "पृथ्वी तल" भूगोल की आधारशिला है , जिस पर सभी भौतिक मानवीय घटनाएँ एवं अन्तः कियाएँ सम्पन्न होती रही हैं । ये सभी क्रियाएँ 'समय' एवं 'स्थान' के परिवर्तनशील सम्बन्ध में घटित हो रही है।
- पृथ्वी तल का भौगोलिक शब्दार्थ बहुत व्यापक है, जिसमें स्थल मण्डल, जल मण्डल, वायुमण्डल, जैव मण्डल, पृथ्वी पर सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रभाव एवं पृथ्वी की गतियों का वैज्ञानिक आंकलन किया जाता है ।

  भूगोल में भौतिक एवं मानवीय पहलूओं और उनमें पारस्परिक सम्बंधों का अध्ययन किया जाता है। इसलिए प्रारम्भ से ही भूगोल विषय की दो प्रमुख शाखाएँ उभर कर आयी है।

  (1)भौतिक भूगोल (ii) मानव भूगोल
- कालान्तर में विशिष्टीकरण (वर्ष 1950 के पश्चात) बढ़ने से इन दो शाखाओं की अनेक उप शाखाएँ विकसित होती गयी, जिससे विषय सामग्री एवं विषय क्षेत्र में समृद्धि आती गई ।
- भूगोल की प्रमुख शाखाएँ एवं उप शाखाएँ निम्नलिखित हैं:-

भौतिक भूगोल	**मानव भूगोल**
1. भू गणित (Geodesy)	1.आर्थिक भूगोल (Economic Geography)
2.भू भौतिकी (Geophysics)	2. कृषि भूगोल (Agricultural Geography)
3.खगोलीय भूगोल (Astronomical Geo.)	3. संसाधन भूगोल (Resource Geo.)
4.भू आकृति विज्ञान (Geomorphology)	4. औद्योगिक भूगोल (Industrial Geography)
5. जलवायु विज्ञान (Climatology)	5. परिवहन भूगोल (Transport Geography)
6.समुद्र विज्ञान (Oceanography)	6. जनसंख्या भूगोल (Population Geography)
7.जल विज्ञान (Hydrology)	7. अधिवास भूगोल (Settlement Geography) (i) नगरीय भूगोल (Urban Geography) (ii) ग्रामीण भूगोल (Rural Geography)
8.हिमनद विज्ञान (Glaciology)	8. राजनीतिक भूगोल (Political Geography)
9.मृदा विज्ञान (Soil Geography)	9. सैन्य भूगोल (Military Geography)
10. जैव विज्ञान (Bio - Geography)	10. ऐतिहासिक भूगोल (Historical Geography)
11. चिकित्सा भूगोल (MedicalGeography)	11. सामाजिक भूगोल (Social Geography)
12. पारिस्थितिकी /पर्यावरण भूगोल (Ecology / Environment Geography)	12. सांस्कृतिक भूगोल (Cultural Geography)
13. मानचित्र कला (Cartography)	13. प्रादेशिक नियोजन (Regional Planning)
	14. दूरस्थ संवेदन व जी.आई.एस.(Remote Sensing and G.I.S.)

- **अभ्यासार्थ प्रश्न**

1. भूगोल की जिस शाखा में तापमान, वायुदाब, पवनों की दिशा एवम् गति,आर्द्रता, वायुराशियाँ, विक्षोभ आदि के विषय में अध्ययन किया जाता है , वह है-

(अ) खगोलीय भूगोल

(ब) मृदा भूगोल

(स) समुद्र विज्ञान

(द) जलवायु विज्ञान **(द)**

2. भूगोल की दो प्रमुख शाखाएँ हैं

(अ) कृषि भूगोल एवं आर्थिक भूगोल

(ब) भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल

(स) पादप भूगोल एवं जीव भूगोल

(द) मौसम भूगोल एवं जलवायु भूगोल **(ब)**

3. किस भूगोलवेत्ता ने भूगोल (Geography) शब्दावली का सर्वप्रथम उपयोग किया ?

(अ) इरेटॉस्थेनीज

(ब) हेरेडोइस

(स) स्ट्रैबो

(द) टॉलमी **(अ)**

4. पृथ्वी की आयु मानी जाती है

(अ) 4.8 अरब वर्ष

(ब) 5.0 अरब वर्ष

(स) 4.6 अरब वर्ष

(द) 3.9 अरब वर्ष **(स)**

अध्याय – 2

भारत की भौगोलिक स्थिति व विस्तार

- आर्यों की भरत नाम की शाखा अथवा महामानव भारत के नाम पर हमारे देश का नामकरण भारत हुआ ।
- प्राचीन काल में आर्यों की भूमि के कारण यह आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था ।
- ईरानियों ने सिन्धु नदी के तटीय निवासियों को हिन्दू एवं इस भू - भाग को हिन्दुस्तान का नाम दिया ।
- रोम निवासियों ने सिन्धु नदी को इण्डस तथा यूनानियों ने इण्डोस व इस देश को इण्डिया कहा। यही देश विश्व में आज भारत के नाम से विख्यात है ।
- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. (1269219.34 वर्ग मील) है।

कर्क रेखा अर्थात् 23½ उत्तरी अक्षांश हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है यह रेखा भारत को दो भागों में विभक्त करती है (1) उत्तरी भारत , जो शीतोष्ण कटिबन्ध में फैला है तथा (2) दक्षिणी भारत, जिसका विस्तार उष्ण कटिबन्ध है।

कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों क्रमशः गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, प. बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम है।

NOTE- राजस्थान की राजधानी जयपुर, त्रिपुरा की राजधानी अगरतला व मिजोरम की राजधानी आइजोल कर्क रेखा के उत्तर में तथा शेष राज्यों की राजधानियाँ दक्षिण में स्थित है।

NOTE – मणिपुर कर्क रेखा के सर्वाधिक उत्तर में स्थित है।

प्रश्नः- निम्न में से कौन सा भारत का राज्य कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है ?

(1) त्रिपुरा (2) मणिपुर

(3) मिजोरम (4) झारखण्ड

उत्तर :- (2)

NOTE- कर्क रेखा राजस्थान से न्यूनतम व मध्यप्रदेश से सर्वाधिक गुजरती है।

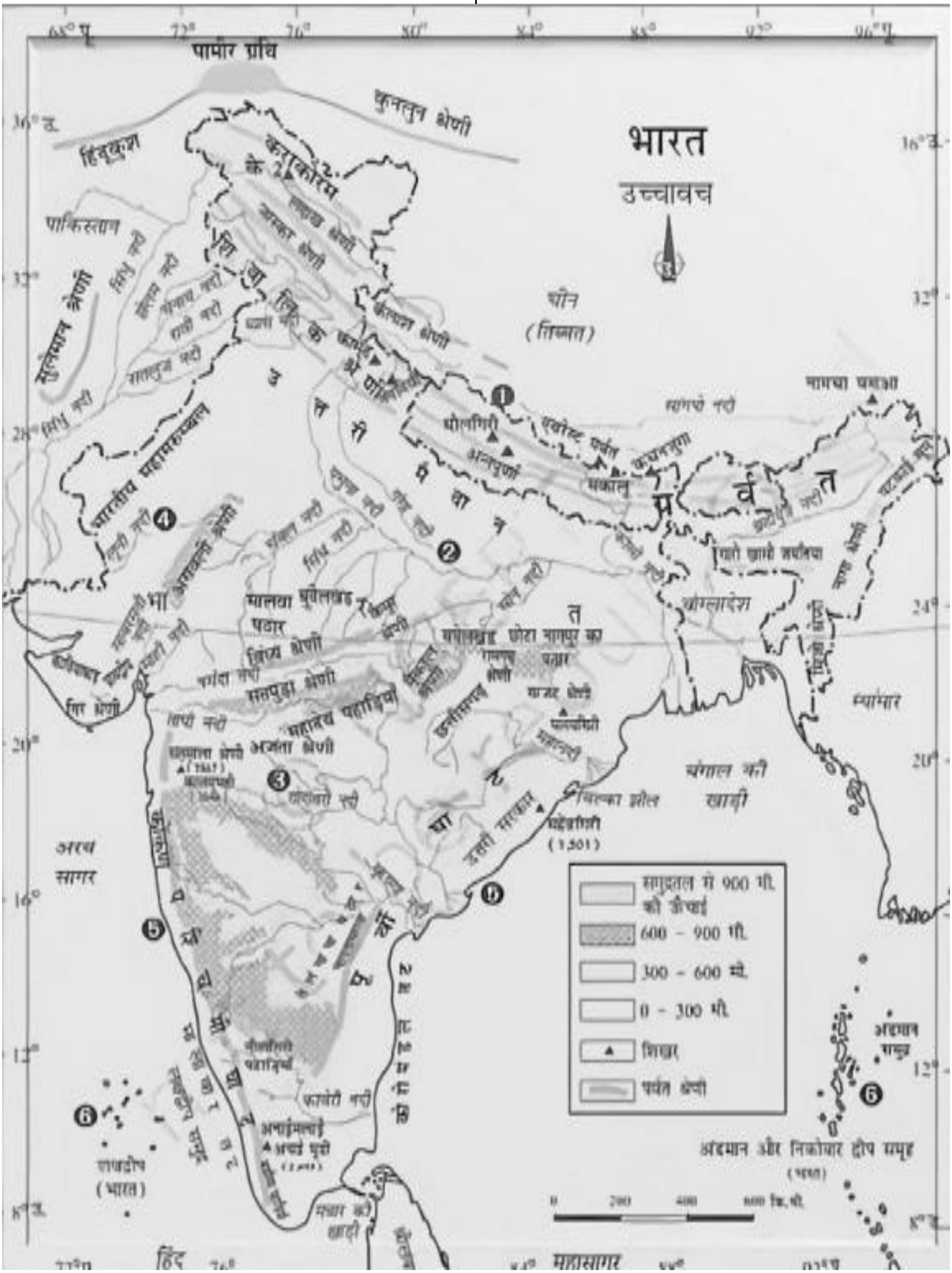
भारत
उच्चावच
पामीर ग्रंथि
कुनलुन श्रेणी
हिंदूकुश
काराकोरम
लद्दाख श्रेणी
जास्कर श्रेणी
पाकिस्तान
सुलेमान श्रेणी
चीन
(तिब्बत)
कैलाश श्रेणी
नामचा बरुआ
सांग्पो नदी
धौलागिरि
अन्नपूर्णा
एवरेस्ट पर्वत
कंचनजुंगा
भारतीय महामरुस्थल
अरावली श्रेणी
चंबल नदी
सिंधु नदी
सतलुज नदी
मालवा बुंदेलखंड पठार
विंध्य श्रेणी
बघेलखंड
छोटा नागपुर का पठार
नर्मदा नदी
सतपुड़ा श्रेणी
महादेव पहाड़ियां
गिर श्रेणी
ताप्ती नदी
अजंता श्रेणी
गोदावरी नदी
बांग्लादेश
म्यांमार
बंगाल की खाड़ी
अरब सागर
चिल्का झील
महेंद्रगिरि
(1,501)
नीलगिरि पहाड़ियाँ
कावेरी नदी
अन्नाईमलाई
अनाई मुडी
लक्षद्वीप
(भारत)
मन्नार की खाड़ी
हिंद
महासागर
अंडमान सागर
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
(भारत)
समुद्रतल से 900 मी. की ऊँचाई
600 - 900 मी.
300 - 600 मी.
0 - 300 मी.
शिखर
पर्वत श्रेणी

- भारत सम्पूर्ण विश्व का लगभग 1/46 वाँ भाग है।
- क्षेत्रफल के अनुसार रूस , कनाडा , चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राज़ील व ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत का विश्व में 7वाँ स्थान है ।
- यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है ।
- भारत का आकार जापान से नौ गुना तथा इंग्लैण्ड से 14 गुना बड़ा है ।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में पाकिस्तान एवं अरब सागर है।

  भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत (मुख्य भूमि) का दक्षिणतम बिन्दु - कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु) है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार में है)।
- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) है।
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है। यह मानक समय रेखा भारत के 5 राज्यों क्रमशः उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा व आंध्रप्रदेश है।
- कर्क रेखा व मानक रेखा छत्तीसगढ़ राज्य में एक दुसरे को काटती है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

भारत की तटीय / समुद्री सीमा = तट रेखा की लम्बाई 7516.6 मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

कुल राज्य = 9 [i. पश्चिमी तट के राज्य- गुजरात (राज्यों में सबसे लंबी तट रेखा), महाराष्ट्र, गोवा (राज्यों में सबसे छोटी तट रेखा), कर्नाटक व केरल ii. पूर्वी तट के राज्य प. बंगाल, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु]

कुल केंद्र शासित प्रदेश= अंडमान निकोबार (सर्वाधिक), लक्षद्वीप, दमन व दीव तथा (न्यूनतम) पुद्दुचेरी

- भारत के 16 राज्य व 2 केंद्र शासित प्रदेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं ।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु

- दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप)
- उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख)
- पश्चिमी बिन्दु- गोहर माता (गुजरात)
- पूर्वी बिन्दु- किबिथु (अरुणाचल प्रदेश)
- मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य	
पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख
अफगानिस्तान(1)	लद्दाख
चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार	
भारत - बांग्लादेश सीमा	4096.7 किमी.
भारत-चीन	3488 किमी.
भारत-पाक सीमा	3323 किमी.
भारत - नेपाल सीमा	1751 किमी.
भारत - म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत - भूटान सीमा	699 किमी.
भारत – अफगानिस्तान	106 किमी. (वर्तमान में POK में स्थित है)

1. **<u>सीमावर्ती सागर :-</u>**
<u>समझौता – UN Convension on low of Ser</u>
<u>UNCLOS</u>
एक समुद्रीमील + 1.852 km
(A) सीमावर्ती सागर
(B) संलग्न सागर
(C) अन्यय आर्थिक क्षेत्र

(A) <u>सीमावर्ती सागर : –</u>

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 12 NM तक की दूरी तक विस्तृत है।
- इस क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है।

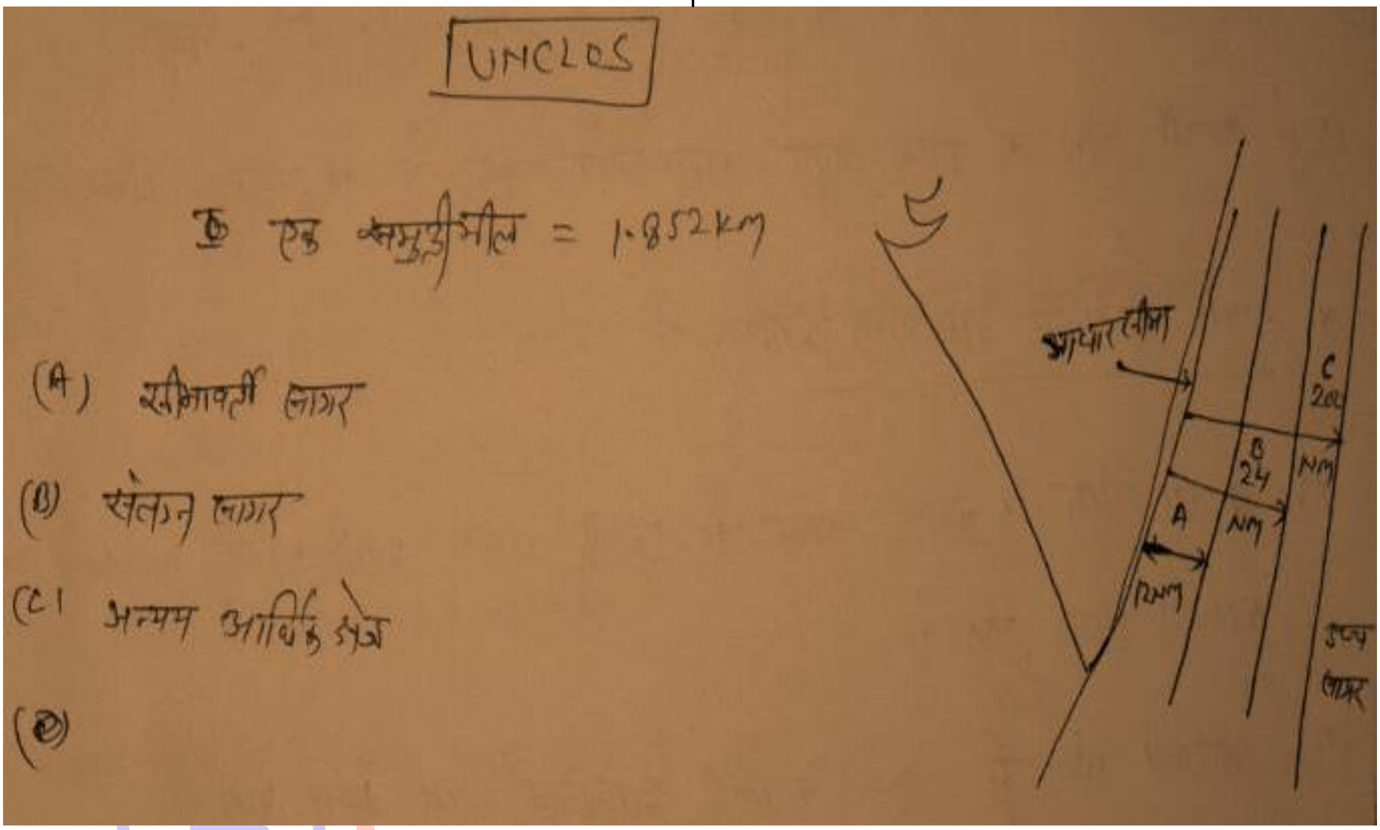

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

(B) <u>संलग्न सागर :- –</u>

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 24 NM की दूरी तक पाया जाता है।
- इस क्षेत्र में भारत को वित्तीय अधिकार प्राप्त हैं, अतः यहाँ भारत सीमा शुल्क आदि ले सकता है।

(C) <u>अन्य आर्थिक क्षेत्र :-</u>

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 200 NM की दूरी तक पाया जाता है।
- इस क्षेत्र में भारत को अनुसंधान , कृत्रिम द्वीप निर्माण एवं महासागरीय संसाधनों के दोहन का अधिकार है।

<u>तटवर्ती सीमा के लाभ :-</u>

1. तटवर्ती सीमा के कारण भारत में मानसून वर्षा प्राप्त होती है तथा दक्षिण भारत में समकारी जलवायु बनी रहती है।
2. तटवर्ती सीमा के कारण बंदरगाहों का निर्माण किया जा सकता है, जिनका उपयोग आयात निर्यात के लिए होता है।
3. तटवर्ती सीमा भारत को विभिन्न देशों से जोड़ती है।
4. तटवर्ती सीमा पर्यटन की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है जैसे – गोवा
5. तटवर्ती सीमा के कारण भारत महासागरीय संसाधनों तक पहुँच सुनिश्चित कर पाता है।

<u>तटवर्ती सीमा के नकारात्मक प्रभाव :-</u>
तटवर्ती सीमा के कारण भारत को सुनामी चक्रवात आदि जैसी आपदाओं से सामना करना पड़ता है।

1. तटवर्ती सीमा की सुरक्षा के लिए अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है।
2. तटवर्ती सीमा के कारण समुद्री लुटेरों एवं तस्करी आदि का डर बना रहता है।

❖ **पड़ोसी देशों के साथ भारत का सीमा विस्तार व सीमा संबंधी विवाद**

1. भारत – बांग्लादेश

- ✓ भारत के 5 राज्य पश्चिम बंगाल(सर्वाधिक), असम (न्यूनतम), मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम बांग्लादेश के साथ सीमा बनाते है।
- ✓ भारत का त्रिपुरा राज्य बांग्लादेश से तीनों ओर से घिरा हुआ है।
- ✓ भारत के असम राज्य बांग्लादेश के साथ दो बार सीमा बनाता है।
- ✓ **जीरोलाइन-** बांग्लादेश व भारत के मध्य की सीमा जीरो लाइन कहलाती है।

- जनसंख्या की दृष्टि से दिल्ली सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- उत्तर प्रदेश की सीमा सबसे अधिक राज्यों (8) को छूती है- उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं बिहार।
- भारत में सर्वाधिक नगरों वाला राज्य उत्तर प्रदेश है, जबकि मेघालय में सबसे कम नगर हैं।
- भारत में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या वाला राज्य महाराष्ट्र है जबकि सबसे कम नगरीय जनसंख्या सिक्किम में है।

प्रमुख चैनल / जलडमरूमध्य	
विभाजित स्थल खण्ड	**चैनल / खाड़ी / स्ट्रेट**
इन्दिरा प्वाइंट-इण्डोनेशिया	ग्रेट चैनल
लघु अंडमान-निकोबार	10° चैनल
मिनीकॉय-लक्षद्वीप	9° चैनल
मालदीव-मिनीकाय	8° चैनल
भारत-श्रीलंका	पाक जलडमरूमध्य

- **अभ्यासार्थ प्रश्न**

1. भारत का अक्षांशीय व देशांतरिय विस्तार क्रमशः है-
(A) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पश्चिमी देशान्तर तक
(B) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक
(C) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' दक्षिणी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक
(D) 68°7' उत्तरी अक्षांश से 97°25' उत्तरी आक्षांश तथा 8°4' पूर्वी देशान्तर से 37°6' पूर्वी देशान्तर तक **(B)**

2. कर्क रेखा भारत के कितने राज्यों से होकर गुजरती है?
(A) 5 (B) 6
(C) 7 (D) 8 **(D)**

3. भारत के किस राज्य की सीमा नेपाल के साथ सीमा नहीं बनाती है?
(A) पश्चिम बंगाल (B) सिक्किम
(C) बिहार (D) हिमाचल प्रदेश **(D)**

4. प्राचीन भारतीय भौगोलिक मान्यता के अनुसार भारतवर्ष किस द्वीप का अंग था ?
(A) पुष्कर द्वीप (B) जम्बू द्वीप
(C) कांच द्वीप (D) कुश द्वीप **(B)**

5. भारतीय भूभाग का कुल क्षेत्रफल लगभग है-
(A) 32,87,263 वर्ग किमी.
(B) 1269219.34 वर्ग मील
(C) 32,87,263 वर्ग एकड़
(D) A व B दोनों **(D)**

6. भारत और श्रीलंका को अलग करने वाली जलसंधि है-
(A) कुक जलसंधि (B) मलक्का जलसंधि
(C) पाक जलसंधि (D) सुंडा जलसंधि **(C)**

7. किस भारतीय राज्य की सीमा सर्वाधिक राज्यों की सीमा को स्पर्श करती है?
(A) मध्य प्रदेश (B) असम
(C) उत्तर प्रदेश (D) आन्ध्र प्रदेश **(C)**

8. निम्नलिखित प्रमुख भारतीय नगरों में से कौन-सा एक सबसे अधिक पूर्व की ओर अवस्थित है?
(A) हैदराबाद (B) भोपाल
(C) लखनऊ (D) बैंगलुरु **(C)**

9. भारत के किस प्रदेश की सीमाएं तीन देशों क्रमशः नेपाल, भूटान एवं चीन से मिलती हैं?
(A) अरुणाचल प्रदेश (B) मेघालय
(C) पश्चिम बंगाल (D) सिक्किम **(D)**

10. भारत के कितने राज्यों से समुद्र तटरेखा संलग्न है?
(A) 7 (B) 8
(C) 9 (D) 10 **(C)**

11. निम्न नगरों में से कौन-सा कर्क रेखा के निकटतम है ?
(A) कोलकाता (B) दिल्ली
(C) जोधपुर (D) नागपुर **(A)**

12. निम्नलिखित में से किस द्वीप युग्म को 10 डिग्री चैनल अलग करता है ?
(A) दक्षिणी अंडमान तथा लिटिल अंडमान
(B) लक्षद्वीप एवं मिनिकाय
(C) छोटा अंडमान तथा कार निकोबार
(D) पंबन तथा मन्नार **(C)**

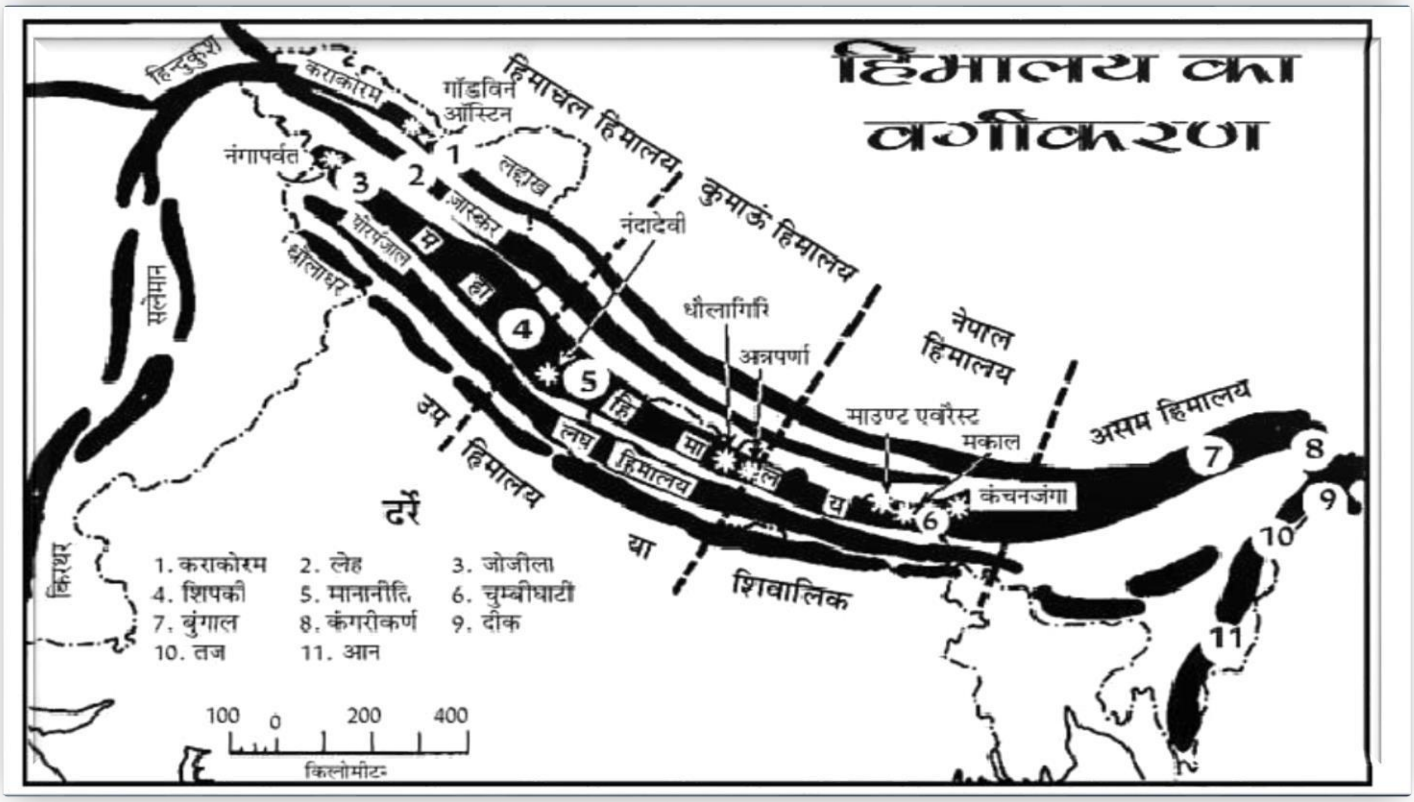

ट्रांस हिमालय :-

- ट्रांस हिमालय का निर्माण हिमालय से भी पहले हो चुका था।
- इसके अन्तर्गत काराकोरम, लद्दाख, कैलाश व जास्कर श्रेणी आती हैं।
- इन श्रेणियों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।

(A) काराकोरम श्रेणी –

- यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।
- इसकी खोज वर्ष 1906 स्वेन हेडन ने की थी।
- इस श्रेणी को "एशिया की रीढ़" कहा जाता है।
- भारत की सबसे ऊँची चोटी k2 या गाडविन ऑस्टिन (8611मी.) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।
- यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है ।
- काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रा में स्थित है ।
- काराकोरम दर्रा (विश्व का सबसे ऊँचा दर्रा) काराकोरम श्रृंखला पर स्थित कश्मीर को चीन से जोड़ने वाला संकीर्ण दर्रा हैं।
- काराकोरम श्रृंखला पर भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है।
- विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा (सियाचिन) यहीं अवस्थित है।
- सियाचिन ग्लेशियर से नुब्रा नदी का उद्गम होता है जिसके प्रवाह क्षेत्र में घाटी का निर्माण होता है।
- काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख हिमनद (ग्लेशियर) स्थित हैं।

- सियाचिन (72 km)
- बाल्टोरों - (58km)
- बीयाफो – 63 km
- हिस्पर (61 Km)

(B) लद्दाख श्रेणी –

- विश्व की सबसे तीव्र ढलान वाली चोटी राकापोशी (7788मी.) लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है ।
- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलाश श्रेणी के रूप में स्थित है।
- यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- इस श्रेणी में भारत का सबसे ऊँचा पठार " लद्दाख का पठार" स्थित है इसी पठार पर भू तापीय ऊर्जा के लिए प्रसिद्ध पूंगा घाटी स्थित है ।
- यह भारत का न्यूनतम् वर्षा वाला क्षेत्र द्रास स्थित है ।
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलाश है ।
- इस क्षेत्र में अलवणजल की झीलें जैसे- डल और वुलर तथा लवणजल झीलें जैसे- पैंगोंग सो (गलवान घाटी के नजदीक यह विश्व की सबसे ऊँची खारे पानी की झील है) और सोमुरीरी भी पाई जाती हैं ।

(C) जास्कर श्रेणी -

- यह लद्दाख हिमालय के समांतर दक्षिणी दिशा में स्थित हैं ।
- नंगा पर्वत इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणीयों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है।
- इस श्रेणी में श्योक नदी प्रवाहित होती है।

उत्तरी हिमालय वृहत् या हिमाद्रि या महान हिमालय –

- इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरवा पर्वत तक धनुष की आकृति में फैला हुआ है जिसकी कुल लम्बाई 2500 km तक है तथा औसत ऊँचाई 5000- 6000 मी. तक है।
- उत्तरी हिमालय को भौतिक विभाजन के दृष्टिकोण से दो भागों में बाँटा जा सकता है-
- विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ इसी श्रेणी पर पाई जाती है जिसमें प्रमुख है-
  - माउंट एवरेस्ट (8848 मी.) विश्व की सबसे ऊँची चोटी
  - कंचनजंगा (8598 मी.)
  - मकालू (8481 मी.)
  - धौलागिरी (8172 मी.)
  - अन्नपूर्णा (8076 मी.)
  - नंदा देवी (7817 मी.)
- एवरेस्ट को पहले तिब्बत में 'चोमोलुगंमा' के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ 'पर्वतो की रानी'।
- एवरेस्ट, कंचनजंगा, मकालू, धौलागिरि, नंगा पर्वत, नामचा बरवा इसके महत्त्वपूर्ण शिखर है ।
- भारत में हिमालय की सर्वोच्च ऊँची चोटी कंचनजंगा यही स्थित हैं ।
- यह विश्व की तीसरी सबसे ऊँची चोटी है ।
- कश्मीर हिमालय **करेवा (karewa)** के लिए भी प्रसिद्ध है, जहाँ जाफरान (केसर की किस्म) की खेती की जाती है ।
- वृहत हिमालय में जोजीला, पीर पंजाल, बनिहाल , जास्कर श्रेणी में फोटुला और लद्दाख श्रेणी में खारदुन्गला जैसे महत्त्वपूर्ण दर्रे स्थित हैं।

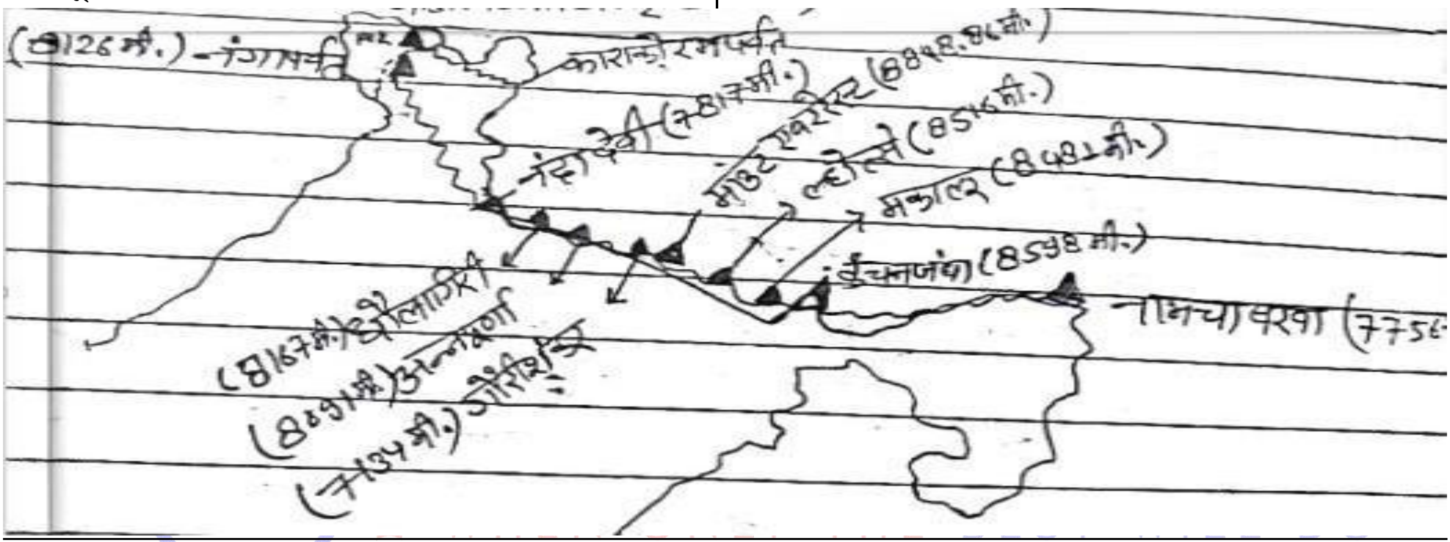

सिंधु तथा इसकी सहायक नदियाँ , झेलम और चेनाब इस क्षेत्र को प्रवाहित करती हैं । यह हिमालय विलक्षण सौंदर्य और खूबसूरत दृश्य स्थलों के लिए जाना जाता है। हिमालय की यही रोमांचक दृश्यावली पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है जिसमें प्रमुख तीर्थस्थान- जैसे वैष्णो देवी, अमरनाथ गुफ़ा और चरार -ए- शरीफ इत्यादि है।

लघु या मध्य या हिमाचल हिमालय –

- महान हिमालय के दक्षिण में तथा शिवालिक के उत्तर में इसका विस्तार है। इसकी सामान्य ऊँचाई 1800-3000मी. है ।
- इसके अन्तर्गत कई श्रेणियाँ पाई जाती हैं।
  - पीर पंजाल (जम्मू कश्मीर)
  - धौलाधार (हिमाचल प्रदेश)
  - नाग टिब्बा (उत्तराखण्ड)
  - कुमायूँ (उत्तराखण्ड)
  - महाभारत (नेपाल)
- लघु हिमालय तथा महान हिमालय के बीच कई घाटियों का निर्माण हुआ है ।
  - कश्मीर की घाटी (जम्मू कश्मीर)
  - कुल्लू - काँगड़ा घाटी (हिमाचल प्रदेश)
  - काठमांडू घाटी (नेपाल)
- लघु हिमालय अपने स्वास्थ्यवर्धक पर्यटन स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है जिसके अन्तर्गत शामिल हैं –
- कुल्लू, मनाली, डलहौजी, धर्मशाला, शिमला (हिमाचल प्रदेश)
  अल्मोड़ा, मसूरी, चमोली (उत्तराखण्ड)
- लघु हिमालय की श्रेणीयों की ढालों पर शीतोष्ण घास के मैदान पाये जाते है जिन्हे जम्मू-कश्मीर में **'मर्ग'** (गुलमर्ग, सोनमर्ग) व उत्तराखण्ड में **'बुग्याल व पयार'** कहा जाता है।

उप हिमालय शिवालिक या बाह्य हिमालय

- मध्य हिमालय के दक्षिण में शिवालिक हिमालय की अवस्थिति को बाह्य हिमालय के नाम से जानते हैं। यह लघु हिमालय के दक्षिण में स्थित है।
- शिवालिक और लघु हिमालय के बीच स्थित घाटियों को पश्चिम में दून (जैसे- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून) व पूर्व में द्वार (जैसे- हरिद्वार) कहते हैं।
- शिवालिक को जम्मू कश्मीर में कश्मीर पहाड़ियाँ तथा अरुणाचल प्रदेश में डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी की पहाड़ियो के नाम से जाना जाता है।

चोस- (Chos)

- शिवालिक हिमालय में चलने वाली मानसूनी धाराएँ चोस कहलाती है।

करेवा

- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के समय कश्मीर घाटी में कुछ अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों के द्वारा लेकर आए अवसाद के कारण ये झीलें अवसाद से भर गई।
- ऐसे उपजाऊ क्षेत्रों में जाफरन / केसर की खेती की जाती है जिन्हें करेवा कहा जाता है।

ऋतु प्रवास

- जम्मू और कश्मीर में रहने वाली जनजातियों गुज्जर, बकरवाल, झुकिया, भूटिया इत्यादि मध्य हिमालय में बर्फ के पिछलने के उपरान्त निर्मित होने वाले घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराने के लिए प्रवास करते हैं तथा ये पुन: सर्दियों के दिनों में मैदानी भागों में आ जाते हैं जिसे ऋतु प्रवास कहा जाता है।

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय का ही विस्तार हैं

नामचा बरवा के निकट हिमालय अक्षसंघीय मोड़ के कारण दक्षिण की ओर मुड़ जाता है। पटकाईबुम, नागा, मणिपुर, लुशाई, या मिजो पहाड़ी आदि हिमालय का विस्तार बन जाता हैं यह पहाड़ियाँ भारत एवं म्यांमार सीमा पर स्थित हैं।

अरुणाचल प्रदेश	डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी (शिवालिक हिमालय) पटकाई बूम (महान हिमालय)
नागालैण्ड	नागा पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी माउंट सरमाटी (3826 मीटर) है। इस पर नागालैण्ड की राजधानी कोहिमा (भारत के किसी राज्य की सबसे पूर्वोतर राजधानी) स्थित है।
मणिपुर	मणिपुर की पहाड़ी या लैमाटोल पहाड़ी इस पर लोकटक झील स्थित है। इस झील में भारत का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान कैबुल लामजाओ स्थित है।
मिजोरम	मिजो पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी ब्लू माउंटेन है।
मेघालय	गारो, खांसी व जयंतिया पहाड़ियाँ (प्रायद्वीपीय पठारी भाग का हिस्सा) गारो खासी एवं जयंतिया पहाड़ी शिलांग के पठार पर अवस्थित है।
असम	मिकिर, रेंगमा व बरेल पहाडिया **NOTE-** बरेल पहाड़ी प्रायद्वीपीय भारत को महान हिमालय से अलग करती है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

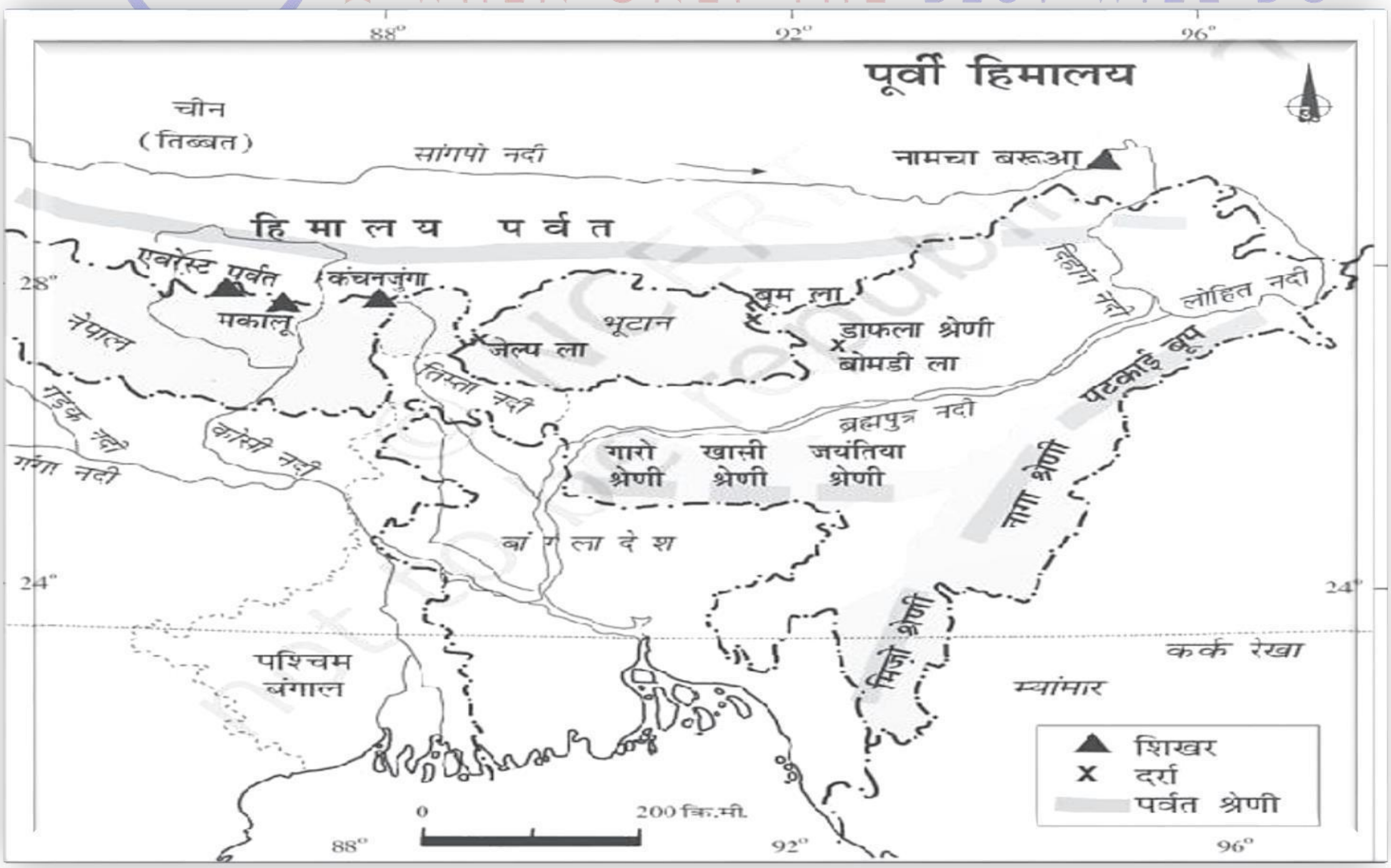

- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ काफी कटी - फटी हैं।
- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ भारतीय मानसून को दिशा प्रदान करती हैं।

इस तरह यह पहाड़ियाँ जल विभाजक के साथ - साथ जलवायु विभाजक हैं।

हिमालय का प्रादेशिक विभाजन-

सिडनी बुर्राड ने हिमालय का प्रादेशिक विभाजन (नदियों के आधार पर) किया तथा हिमालय को 4 प्रादेशिक भागों में बाँटा ।

क्र. सं.	हिमालय	लम्बाई (किमी.)	नदियाँ	विस्तार
1.	पंजाब हिमालय	560	सिन्धु - सतलुज	जम्मू-कश्मीर, लद्दाख व हिमाचल प्रदेश
2.	कुमायूँ हिमालय	320	सतलुज-काली	उत्तराखंड
3.	नेपाल हिमालय	800	काली-तिस्ता	नेपाल, सिक्किम व प. बंगाल
4.	असम हिमालय	750	तिस्ता-ब्रह्मपुत्र	सिक्किम, प. बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, भूटान व चीन

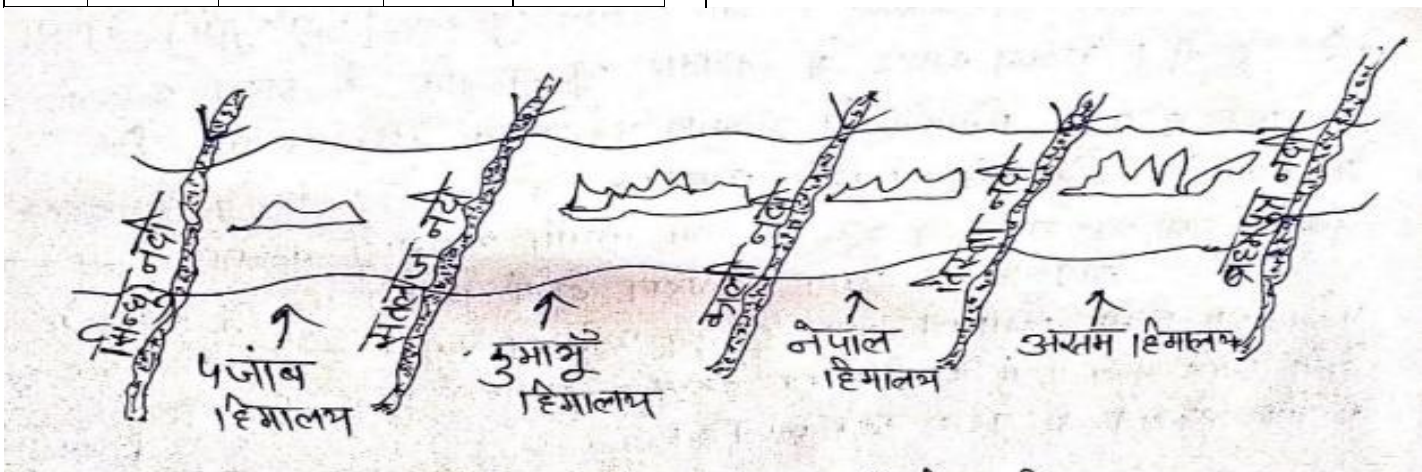

चित्र – हिमालय का प्रादेशिक विभाजन

1. **<u>पंजाब हिमालय</u>** :- पंजाब हिमालय को कश्मीर हिमालय तथा हिमाचल हिमालय भी कहा जाता है। इसका विस्तार सिन्धु नदी से सतलज नदी के मध्य है ।

- पंजाब हिमालय की प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ – कराकोरम , लद्दाख , जास्कर , पीरपंजाल
- प्रमुख दर्रे – जोजीला दर्रा , बुर्जिल दर्रा , बरालाच्छा दर्रा

2. **<u>कुमायूँ हिमालय :-</u>** कुमायूँ हिमालय का विस्तार सतलज नदी व काली नदी के मध्य है इसका पश्चिमी भाग “गढवाल हिमालय” तथा पूर्वी भाग “कुमायूँ हिमालय” गंगा यमुना आदि।

<u>प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ –</u> नंदा देवी, कामेत, त्रिशूल **केदारनाथ, बद्रीनाथ, दूनागिरी तथा गंगोत्री** आदि

<u>प्रमुख हिमनद</u> - गंगोत्री, यमुनोत्री आदि

3. **<u>नेपाल हिमालय :-</u>** इसका विस्तार काली नदी व तीस्ता नदी के बीच पाया जाता है। इसका अधिकांश विस्तार नेपाल में होने के कारण इसे नेपाल हिमालय कहा जाता है। नेपाल के अतिरिक्त इसका विस्तार तिब्बत, सिक्किम, दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) में भी है ।

- नेपाल हिमालय क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा व ऊँचाई के आधार पर भी सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला है ।
- नेपाल हिमालय में ही विश्व की सबसे ऊँची छोटी माउन्ट एवरेस्ट स्थित है ।
- अन्य पर्वत चोटियाँ – कंचनजंगा, मकालू, धौलागिरी अन्नापूर्णा है ।

4. **<u>असम हिमालय :-</u>** इसका विस्तार क्षेत्र तीस्ता नदी से ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य के क्षेत्र में पाया जाता है। इस क्षेत्र में हिमालय की चौड़ाई सबसे कम पाई जाती है । प्रमुख पर्वत चोटियाँ – नामचा बरवा, कुल्लू कांगड़ी आदि ।

श्रीहरिकोटा

- यह आंध्रप्रदेश के तट पर स्थित है ।
- इसी द्वीप में भारत का एकमात्र उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र 'सतीश धवन अंतिरक्ष' केंद्र स्थित हैं ।

पंबन द्वीप

- यह मन्नार की कड़ी में अवस्थित है
- यह 'आदम ब्रिज अथवा रामसेतु 'का ही भाग है जो भारत व श्रीलंका के बीच स्थित है
- यहीं रामेश्वरम् स्थित है ।

न्यू मूर द्वीप

- यह बंगाल की खाड़ी में भारत व बांग्लादेश की सीमा पर अवस्थित है जिसके कारण दोनों देशों में अधिकार को लेकर विवाद चलने के कारण बाँट लिया गया ।
- भारत के हिस्से में आए भाग का अधिकांश भाग जलमग्न रहता है ।

अब्दुल कलाम द्वीप

- यह ओड़िशा के तट पर स्थित हैं ।
- इसका प्रयोग भारत अपने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम के परिक्षण के लिए करता हैं ।

▪ **अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह**

- यह द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित है।
- अंडमान समूह में मध्य अण्डमान (Middle Andaman) सबसे बड़ा है।
- ये द्वीप समूह देश के उत्तर-पूर्व में स्थित पर्वत श्रृंखला का विस्तार है।
- उत्तर अण्डमान में स्थित कैंडल पीक (SadalesPeak) सबसे ऊँची (लगभग 737 मीटर) चोटी है।
- निकोबार समूह में ग्रेट निकोबार सबसे बड़ा है।
- ग्रेट निकोबार सबसे दक्षिण में स्थित है और इण्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप से केवल 147 किमी. दूर हैं
- बैरन (सक्रीय ज्वालामुखी) एवं नारकोंडम (मृत ज्वालामुखी) ज्वालामुखीय द्वीप हैं जो अंडमान निकोबार द्वीप समूह में स्थित है।
- दिसंबर, 2018 में भारत सरकार ने अंडमान निकोबार द्वीप समूह के कुछ द्वीपों के नए नाम दिए जो इस प्रकार है-

पुराना नाम	**नया नाम**
रोश द्वीप	बोस द्वीप
नील द्वीप	शहीद द्वीप
हेवलोक द्वीप	स्वराज द्वीप

- अंडमान निकोबार द्वीप समूह की प्रमुख जनजातियां महा अंडमानी ओंगे, जारवा, सैंडेलिज, निकोबारी, शैम्पेन इत्यादि।
- डंकन पैसेज दक्षिण अण्डमान एवं लिटिल अण्डमान के बीच है।

10° चैनल लिटिल अण्डमान एवं कार निकोबार के बीच है। यह अण्डमान को निकोबार से अलग करता है।

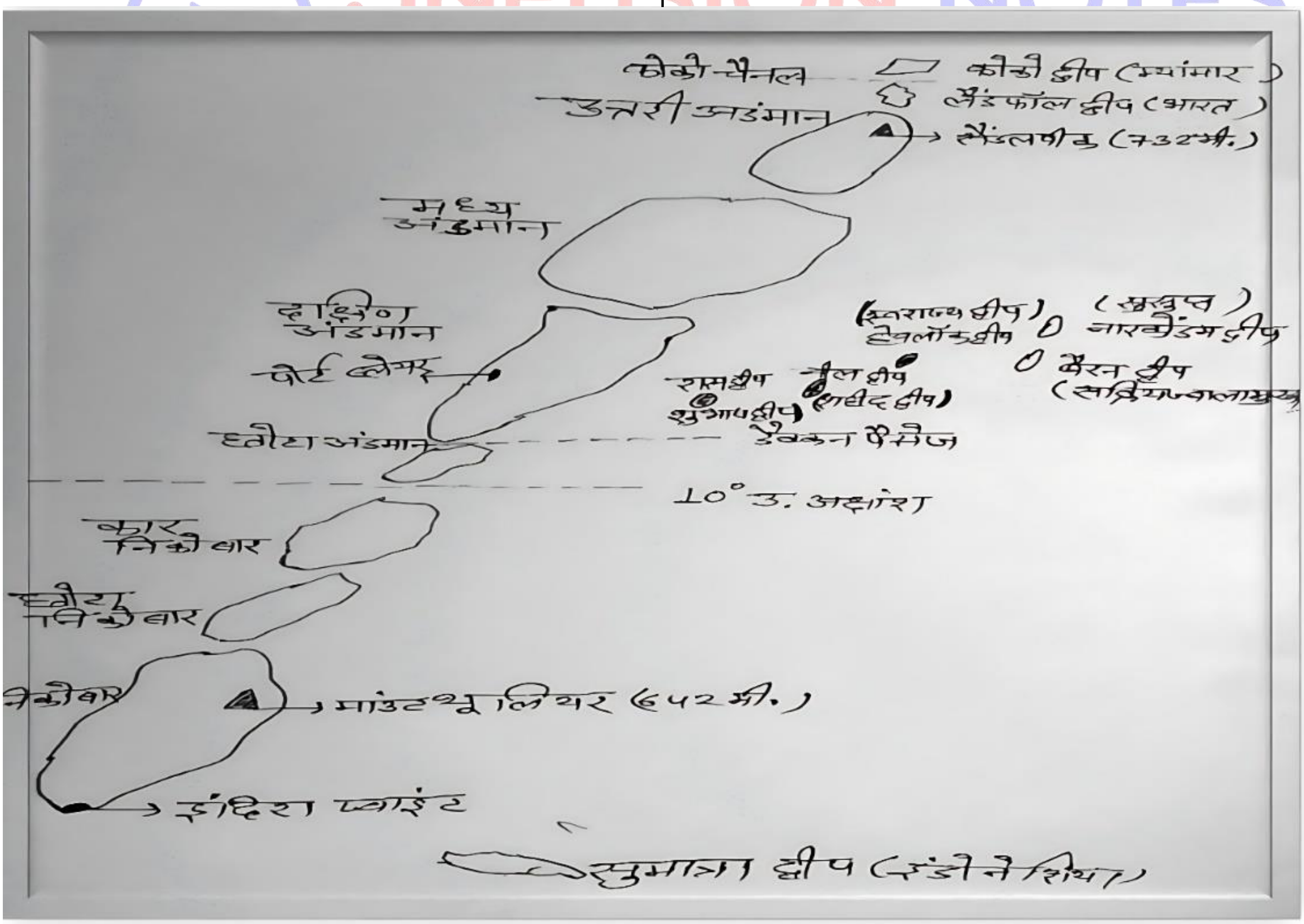

भारत का अपवाह तंत्र

- **उद्गम के आधार पर**
  - **हिमालय से निकलने वाली नदियाँ**
    1. सिन्धु नदी तंत्र
    2. गंगा नदी तंत्र
    3. ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र
  - **प्रायद्वीपीय भारत की नदियाँ**
    1. गोदावरी
    2. महानदी
    3. कृष्णा
    4. कावेरी
    5. नर्मदा
    6. ताप्ती
    7. पेन्नार
    8. वैगई
    9. शरावती
- **समुन्द्र में जल विसर्जन के आधार पर**
  - **अरब सागरीय नदियाँ**
    1. सिन्धु
    2. माही
    3. नर्मदा
    4. ताप्ती
    5. पेरियार
    6. मांडवी
    7. जुआरी
    8. शरावती
  - **बंगाल की खाड़ी**
    1. गंगा
    2. यमुना
    3. कृष्णा
    4. कावेरी
    5. गोदावरी
    6. महानदी
    7. पेन्नार
    8. वैगई
    9. बराक
    10. चम्बल
    11. दामोदर
- **जल संभर के आधार पर**

जल संभर क्षेत्र / Wateshad area

जल संभर क्षेत्र के आकार के आधार पर भारतीय अपवाह श्रेणियों को तीन भागों में बाँटा गया हैं।

1. प्रमुख नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 20000 वर्ग किलोमीटर से अधिक हैं । इसमें 14 नदियाँ श्रेणियाँ शामिल हैं । जैसे - गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, तापी, नर्मदा, माही, पेन्नार, साबरमती , बराक आदि ।
2. मध्यम नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर के बीच हैं । इसमें 44 नदी श्रेणिया हैं, जैसे - कालिंदी, पेरियार, मेघना आदि ।
3. लघु नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 वर्ग किलोमीटर से कम हैं । इसमें न्यून वर्षा के क्षेत्रों मे बहने वाली बहुत सी नदियाँ शामिल हैं ।

अपवाह प्रवृत्ति

1. पूर्ववर्ती अथवा प्रत्यानुवर्ती अपवाह –

- वे नदियाँ, जो हिमालय पर्वत के निर्माण के पूर्व प्रवाहित होती थी तथा हिमालय के निर्माण के पश्चात् महाखण्ड़ बनाकर अपने पूर्व मार्ग से प्रवाहित होती हैं । जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, सिन्धु ।

2. अनुवर्ती नदियाँ –

- वे नदियाँ, जो सामान्य ढाल की दिशा में बहती हैं। प्रायद्वीपीय भारत की अधिकतर नदियाँ अनुवर्ती नदियाँ हैं।

3. परवर्ती नदियाँ –

- चम्बल, सिंध, बेतवा, सोन आदि नदियाँ गंगा और यमुना में जाकर समकोण पर मिलती हैं । गंगा अपवाह तंत्र के परवर्ती अपवाह का उदाहरण हैं ।

4. द्रुमाकृतिक अपवाह –

- वह अपवाह जो शाखाओं में फैला हो, जो द्विभाजित हो तथा वृक्ष के समान प्रतीत हो उसे द्रुमाकृतिक अपवाह कहते हैं ।

सतलज नदी -

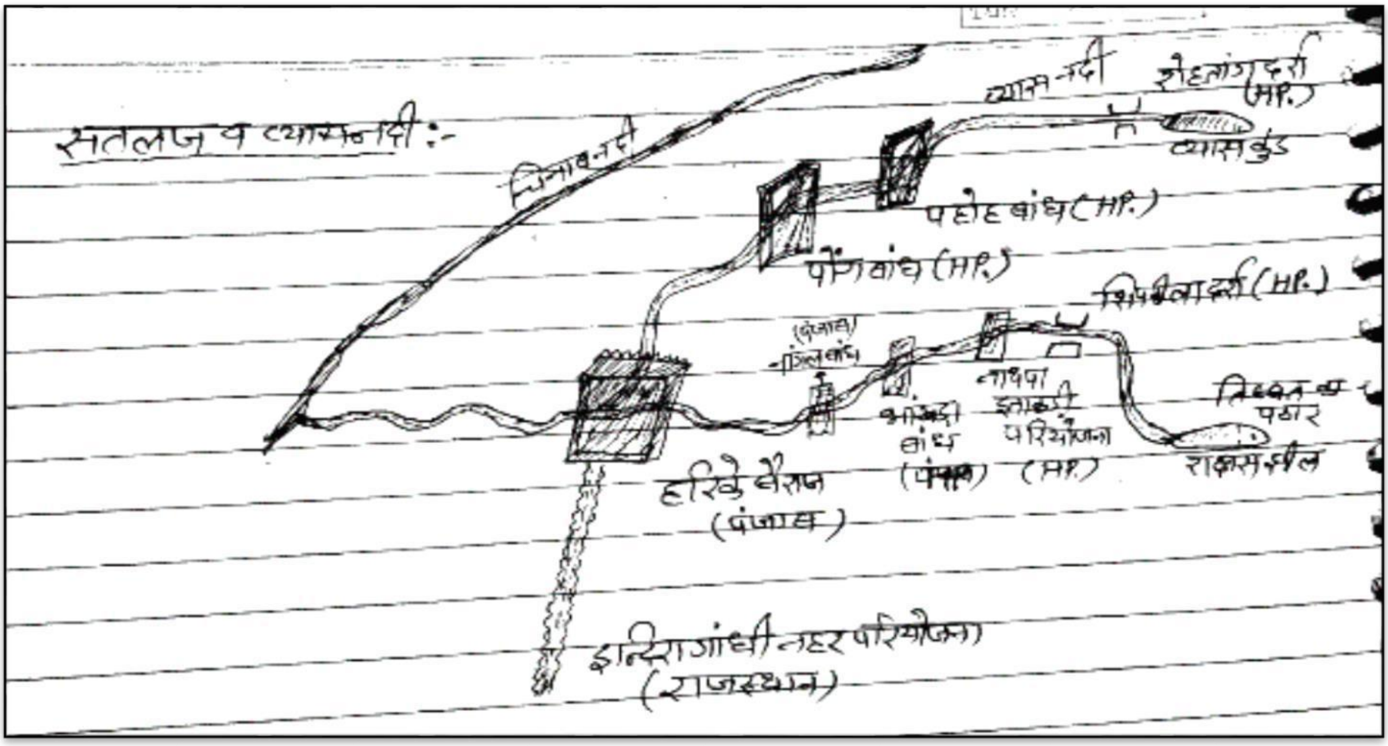

यह एक पूर्ववर्ती नदी हैं जो तिब्बत में लगभग 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर के निकट राक्षस ताल झील से निकलती हैं । जहाँ इसे **लॉगचेन खंबाब** के नाम से जाना जाता हैं ।

- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंड़ो - तिब्बत सीमा के समीप **शिपकी ला दर्रे** के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहते हुए अंत में चिनाब नदी में मिल जाती हैं ।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं।
- इस नदी पर हिमाचल प्रदेश में नाथपा झाकड़ी परियोजना तथा भाखड़ा बाँध व इसके पीछे गोविन्द साग़र जलाशय तथा पंजाब के रोपड़ में नांगल बाँध बना हुआ है।

व्यास नदी (विपाशा नदी)

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं। रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड़ से निकलती हैं।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती हैं । तथा धौलाधर श्रेणी में काती और लारगी में महाखण्ड़ का निर्माण करती हैं ।
- यह पंजाब के मैदान में प्रवेश करती है जहाँ हरिके बैराज के पास सतलुज नदी में जा मिलती है ।

रावी नदी (परुष्णी नदी)

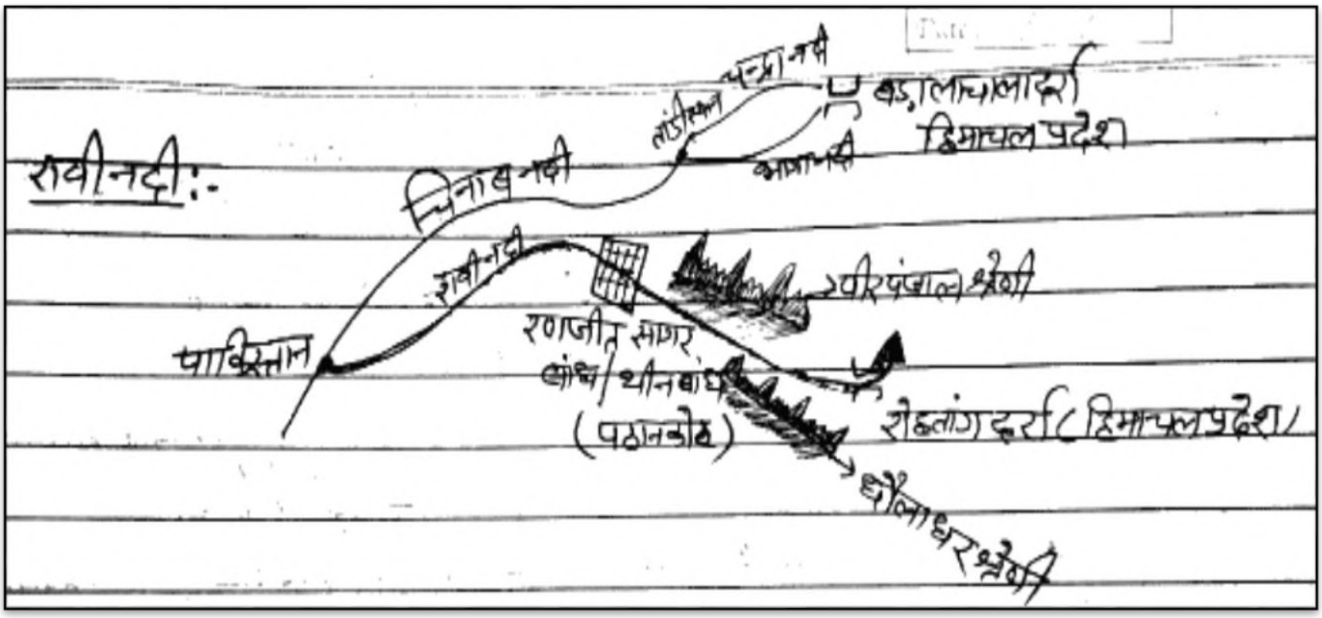

यह नदी सिन्धु की अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं जो हिमालय की कुल्लू की पहाड़ियों में स्थित रोहतंग दर्रे के पश्चिम से निकलती हैं तथा चंबा घाटी से होकर बहती हैं ।

- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती हैं ।
- इस नदी पर पठानकोट(पंजाब) के निकट थीन बाँध / रणजीत सागर बाँध बना हुआ है ।

चिनाब नदी (अस्किनी)

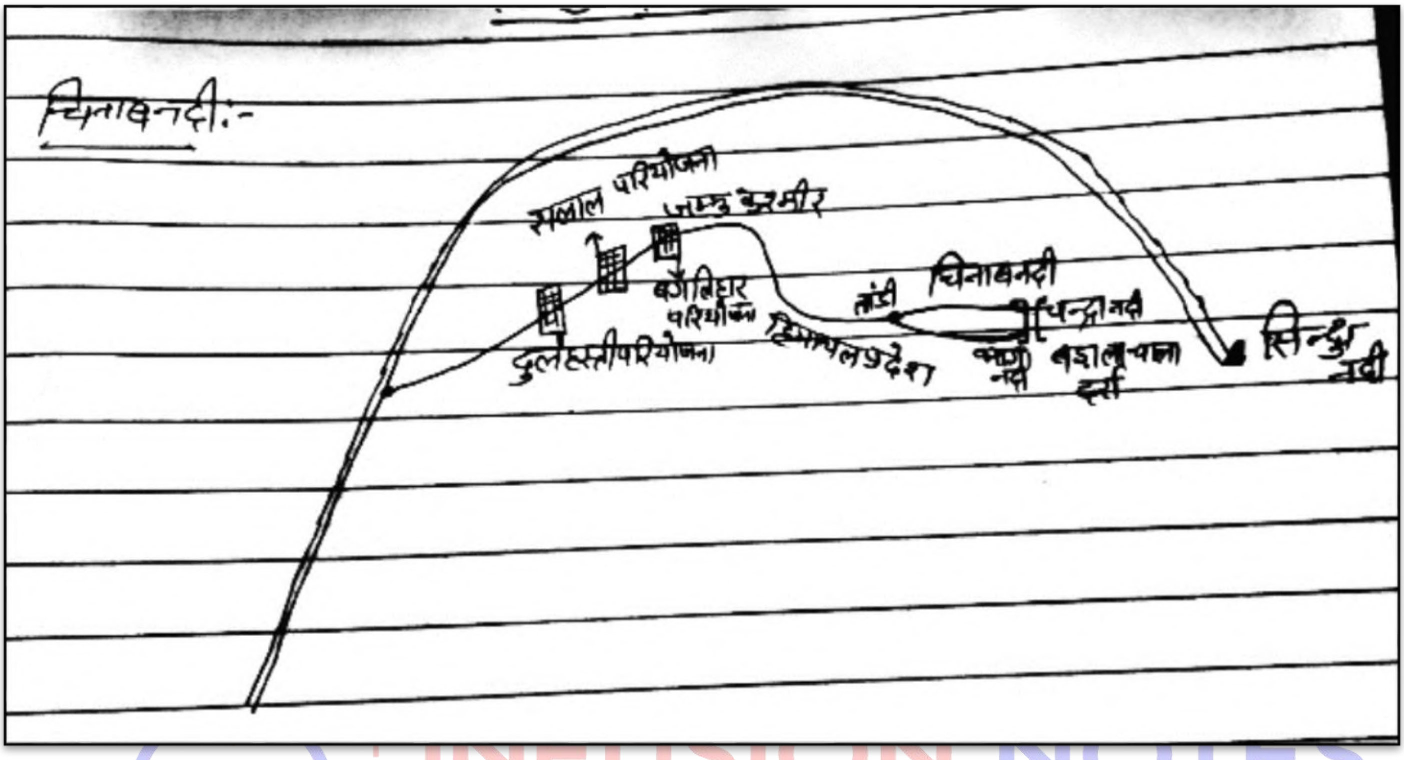

यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी हैं ।

- इसका उद्गम हिमाचल प्रदेश के निकट बड़ालाचला दर्रे से चंद्रा और भागा नामक दो सरिताओं के मिलने से होता हैं ये सरिताएँ हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांड़ी में आपस में मिलती हैं, इसलिए इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता हैं ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र 1,180 कि.मी. हैं ।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर
- इस नदी पर जम्मू कश्मीर में बगलीहार परियोजना, दुलहस्ती परियोजना व सलाल परियोजना का निर्माण किया गया है ।

झेलम नदी (वितस्ता)

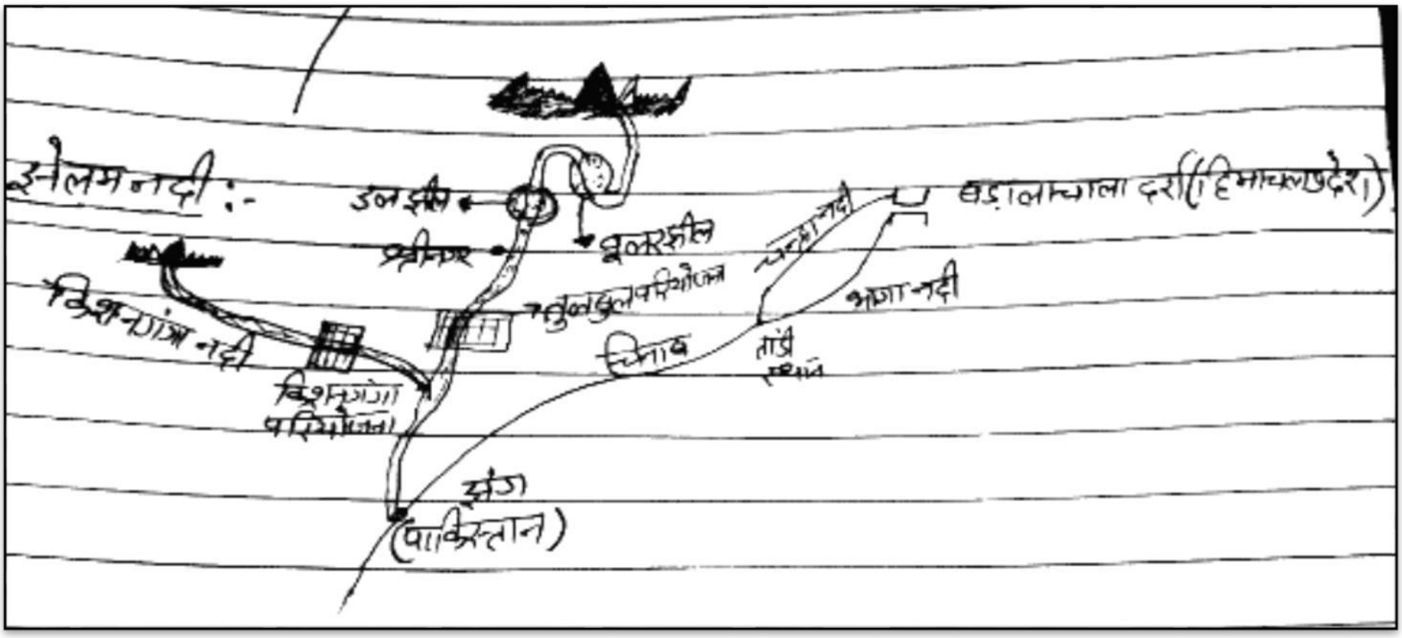

यह सिन्धु की सहायक नदी हैं , जो कश्मीर घाटी के दक्षिण - पूर्वी भाग में पीरपंजाल गिरिपद में स्थित वेरीनाग के निकट शेषनाग झरने से निकलती हैं ।

- प्रवाह क्षेत्र- जम्मू कश्मीर
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले यह नदी श्रीनगर और वुलर झील से बहते हुए एक तंग व गहरे महाखण्ड से गुजरती हैं । पाकिस्तान में झंग के निकट यह चिनाब नदी से मिलती हैं ।
- इस नदी पर जम्मू कश्मीर में तुलबुल परियोजना बनी हुई है ।
- इसकी प्रमुख सहायक नदी ''किशनगंगा'' है जिस पर जम्मू कश्मीर में किशनगंगा परियोजना का निर्माण किया गया है ।

गंगा नदी तंत्र

गंगा नदी

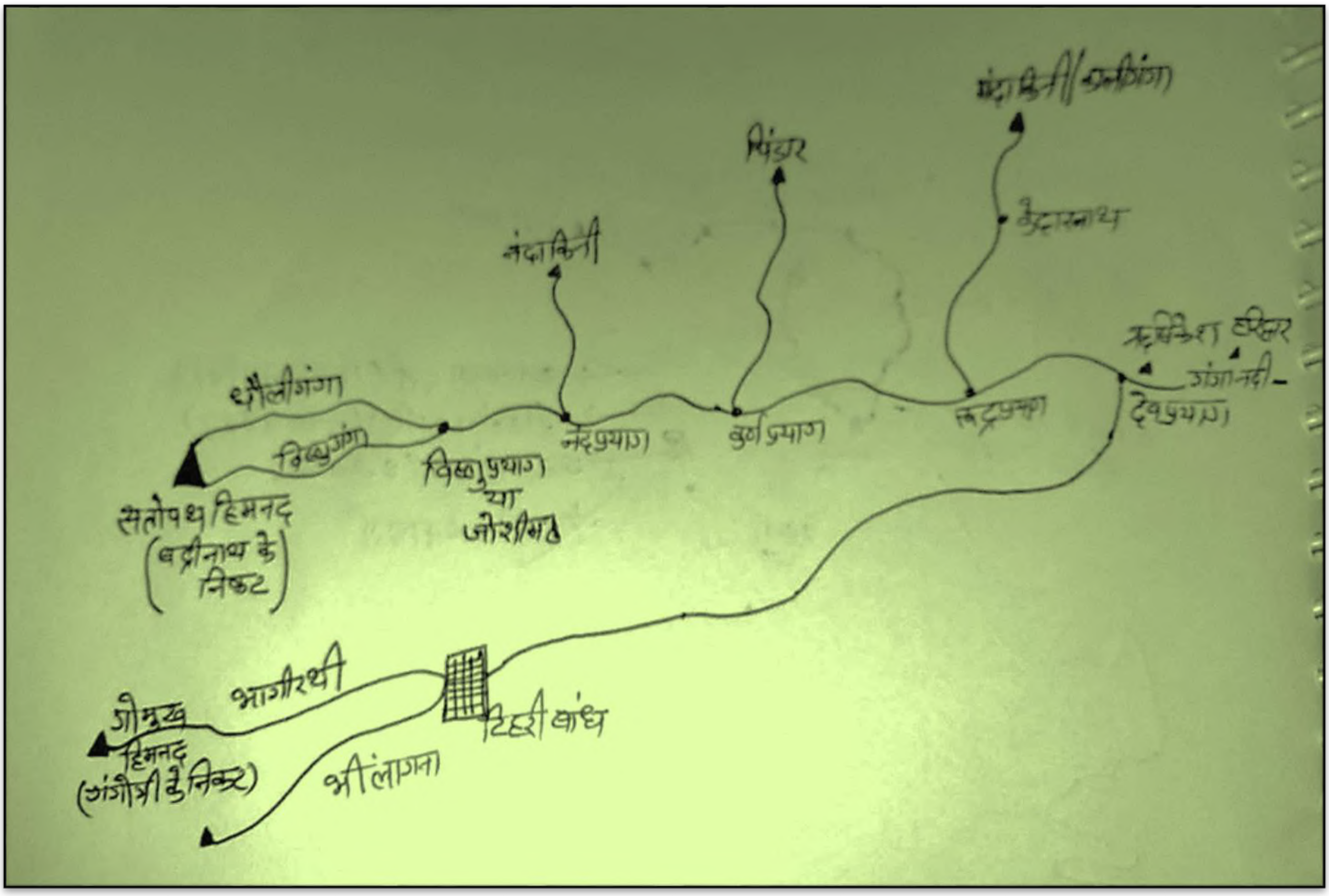

गंगा नदी का उद्गम उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिलें में गोमुख के निकट गंगोत्री हिमनद से हुआ है। जहाँ यह भागीरथी के नाम से जानी जाती है।

- गंगा नदी की कुल लम्बाई 2525 किलोमीटर, उत्तराखंड में 110 किलोमीटर, उत्तरप्रदेश में 1450 किलोमीटर तथा बिहार में 445 किलोमीटर व पश्चिम बंगाल में 520 किलोमीटर बहती हैं।
- उत्तराखंड में देवप्रयाग में भागीरथी नदी, अलकनंदा नदी से मिलती है तथा इसके बाद यह गंगा कहलाती हैं ।
- अलकनंदा नदी का स्त्रोत बद्रीनाथ के ऊपर सतोपथ हिमनद से हुआ है।
- अलकनंदा, धौली गंगा और विष्णु गंगा धाराओं से मिलकर बनती है, जो जोशीमठ या विष्णु प्रयाग में मिलती है ।
- भागीरथी से देवप्रयाग में मिलने से पहले अलकनंदा से कई सहायक नदियाँ आकर मिलती है।

स्थान	**नदी संगम**
विष्णु प्रयाग	धौलीगंगा + अलकनंदा
नंद प्रयाग	मंदाकिनी + अलकनंदा
कर्ण प्रयाग	पिंडार + अलकनंदा
रूद्रप्रयाग	मंदाकिनी + अलकनंदा
देवप्रयाग	भागीरथी + अलकनंदा

- गंगा नदी हरिद्वार (उत्तराखंड) के बाद मैदानी क्षेत्रो में प्रवेश करती है तथा अपने दक्षिण पूर्व में बहते हुए इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में पहुँचती है जहाँ इससे यमुना नदी (गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी) आकर मिलती है।
- इसके बाद यह बिहार व पश्चिम बंगाल मे प्रवेश करती है। पश्चिम बंगाल में यह दो वितरिकाओं (धाराओं) में विभाजित हो जाती है। एक धारा हुगली नदी कहलाती है जो कलकत्ता में चली जाती है तथा मुख्य धारा पश्चिम बंगाल बहती हुए बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है।

हैं । जैसे- गंगा नदी, ब्रह्मपुत्र नदी गोदावरी नदी आदि ।	साबरमती नदी, माही नदी, नर्मदा, ताप्ती नदी आदि ।

भारत में नदियों का महत्व :-

नदियों को सभ्यताओं की पालना कहा जाता है । नदियों के किनारे ही प्राचीन काल में अनेकों सभ्यताओं और संस्कृतियों का विकास हुआ । किसी भी देश के विकास में नदियों का अहम योगदान रहता है । भारत देश में नदियों का आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक महत्व निम्न प्रकार से रहा है ।

नदियों का आर्थिक महत्व :-

1. भारत में हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली नदियाँ सदावाहिनी है, जिनमें वर्षभर पानी की उपलब्धता बनी रहती है । साथ ही उपयुक्त उपजाऊ मृदा की उपलब्धता के कारण ये नदियाँ कृषि के लिए अतिमहत्वपूर्ण होती है ।
2. भारत में नदियों के आस-पास के क्षेत्रों में चावल, गन्ना, गेहूँ, कपास, जूट, आदि खाद्यान और व्यापारिक फसलों का उत्पादन किया जाता है ।
3. नदियों में किये जाने वाले मत्स्य पालन से मत्स्य उद्योगों में बढ़ोत्तरी की जा सकती है ।
4. मत्स्य पालन से ग्रामीण क्षेत्रों में आय के साधनों में वृद्धि होगी ।
5. नदियों पर पन बिजली परियोजनाओं का संचालन कर विद्युत् ऊर्जा की प्राप्ति की जाती है ।
6. नदियों से नहरे निकालकर सूखा एवं अकाल प्रभावित क्षेत्रों में जलापूर्ति की जाती है ।
7. नदियों के किनारे स्थित पर्यटक स्थलों व वन्य जीव अभ्यारणों में पर्यटकों के आने से आय की पाप्ति होती है ।
8. नदियों में नौवहन का विकास कर परिवहन लागत को कम किया जा सकता है ।

नदियों का सांस्कृतिक महत्व :-

1. भारत की विभिन्न प्राचीन संस्कृतियों और सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है । नदियों को सभ्यताओं की जननी कहा जाता है ।
2. सिन्धु नदी के किनारे भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता हड़पा सभ्यता का विकास हुआ ।
3. सिन्धु नदी के किनारे ही वेड पुराणों की रचना हुई।
4. गंगा नदी को भारत की सबसे पवित्र नदी माना जाता है । भारत में गंगा नदी को पूजा "माँ" के रूप में की जाती है।
5. गंगा नदी के किनारे प्रयागराज में प्रत्येक 12 वर्षों के अन्तराल पर कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है, जो कि भारतीय संस्कृति का प्रदर्शन करता है ।
6. नासिक में भी गोदावरी नदी के तट पर कुंभ मेले का आयोजन उसके सांस्कृतिक महत्व को दर्शाता है ।

नदियों का धार्मिक महत्व :-

1. गंगा नदी को भारत की सबसे पवित्र नदी माना जाता है । गंगा नदी के किनारे हरिद्वार, प्रयागराज, और काशी जैसे धार्मिक तीर्थ-स्थल स्थित हैं । जहाँ कुंभ और पूर्णिमा जैसे अवसरों पर गंगा में डुबकी लगाने के लाखों लोगों की भीड़ उमड़ती है ।
2. गोदावरी नदी उत्तर व दक्षिण भारत की संस्कृतियों का संगम है । इसके किनारे त्रयंबकेश्वर, भद्रांचल, नादेड, जैसे पर्यटन स्थल स्थित हैं ।
3. धार्मिक व पौराणिक मान्यताओं के अनुसार गंगा नदी में स्नान करने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है ।

परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न :-

1. हिमालयी अपवाह तंत्र व प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र में अंतर स्पष्ट करें ।
2. गंगा नदी की व्याख्या कीजिए ।
3. हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली नदियों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये ।
4. भारत में नदियों के आर्थिक, सामाजिक, व धार्मिक महत्व को बताईये ।
5. भारत की अन्तःप्रवाह की सबसे बड़ी घग्घर नदी की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए ।
6. नदियाँ मानव-जीवन पर क्या प्रभाव डालती है ? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न :- सूची – I को सूची – II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए –

सूची – I

(A) गोदावरी
(B) महानदी
(C) दामोदर
(D) कावेरी

सूची – II (सहायक नदी)

(i) भवानी
(ii) पेनगंगा
(iii) शिवनाथ
(iv) बाराकर

(1) A – (iv), B – (ii), C – (i), D – (iii)
(2) A – (iii), B – (i), C – (ii), D – (iv)
(3) A – (ii), B – (iii), C – (iv), D – (i)
(4) A – (i), B – (ii), C – (iv), D – (iii)

उत्तर :- (2)

बढ़कर 8 km/s हो जाती है। P-तरंगों के वेग में यह परिवर्तन क्रस्ट तथा मैंटल के मध्य एक असंबद्धता को प्रदर्शित करता है। इसे मोहो असंबद्धता या मोहोरोविकिक असंबद्धता के नाम से जाना जाता है।

- मैंटल को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है:- नीचे स्थित मध्यमंडल (Mesosphere) तथा इसके ऊपर स्थित दुर्बलतामंडल या एस्थेनोस्फेयर (Asthenosphere)
- 'एस्थेनो' शब्द का अर्थ दुर्बलता से है। इसका विस्तार 400 किमी तक आँका गया है। ज्वालामुखी उद्गार के दौरान जो लावा धरातल पर पहुँचता है,उसका मुख्य स्रोत दुर्बलतामंडल है। मैंटल पृथ्वी के आन्तरिक भागों में होने वाली सभी प्रक्रियाओं में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- दुर्बलतामंडल का निचला भाग भी मध्यमंडल की तरह ठोस है, किन्तु ऊपरी भाग प्लास्टिक और आंशिक रूप से पिघली हुई अवस्था में पाया जाता है। दुर्बलतामंडल में भूकंपीय तरंगों का वेग कम हो जाता हैं अतः इसे निम्न वेग प्रदेश (Low Velocity Zone) भी कहते हैं।
- मेंटल उच्च घनत्व वाले पदार्थों जैसे ऑक्सीजन, लोहा और मैग्नीशियम से निर्मित है। मैंटल के पदार्थों के औसत घनत्व में 3.5 g/cm3 से 5.5 g/cm3 के बीच परिवर्तन होता है। इस परत का तापमान 900 0C से 2200 0C के बीच होता है। इसका कारण मैग्मा की उपस्थिति है। ऊपरी परत का दबाव क्रस्ट के निचले हिस्से और मैंटल के ऊपरी हिस्से को लगभग एक ठोस रूप प्रदान करता है। यदि यह दबाव जारी रहता है तो पृथ्वी के अंदर से पिघला हुआ मैग्मा क्रस्ट की दरारों से ज्वालामुखी विस्फोट के माध्यम से सतह तक पहुंचने का प्रयास करता है।
- संवहन धाराओं की उत्पत्ति दुर्बलतामंडल में होती है। जो महाद्वीपीय प्रवाह, भूकंप, ज्वालामुखी आदि जैसी घटनाओं के लिए ऊर्जा की आपूर्ति करता है।

असंबद्धता का आशय ऐसे सतह से है, जहाँ पर भूकंपीय तरंगों की गति अचानक परिवर्तित हो जाती है, इस परिवर्तन का कारण पृथ्वी की भौतिक रासायनिक संरचना में आया परिवर्तन है। भूकंपीय असम्बद्धता भी पृथ्वी की आतंरिक संरचना को समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई हैं। कुछ प्रमुख भूकंपीय असंबद्धताएं निम्नलिखित हैं:-

- **कोनार्ड असंबद्धता** - बाह्य क्रस्ट एवं आतंरिक क्रस्ट के मध्य
- **मोहो असंबद्धता** - आतंरिक क्रस्ट एवं बाह्य मैंटल के मध्य
- **रेपिटी असंबद्धता** - बाह्य मैंटल एवं आतंरिक मैंटल के मध्य
- **गुटेनबर्ग विशार्ट असंबद्धता**- आतंरिक मैंटल एवं बाह्य कोर के मध्य
- **लहमेन असंबद्धता**- बाह्य कोर एवं आतंरिक कोर के मध्य

❖ पृथ्वी की आंतरिक संरचना

कोरः- यह पृथ्वी का सबसे आतंरिक भाग है, जो मेंटल के नीचे पृथ्वी के केंद्र तक पाया जाता है। इसका विस्तार 2900 किमी की गहराई से पृथ्वी के केंद्र तक है। यह पृथ्वी की सबसे आन्तरिक परत है जिसका प्रारंभ गुटेनबर्ग असंबद्धता से होता है। अर्थात गुटेनबर्ग असंबद्धता (2900 किमी) के द्वारा कोर तथा मेंटल को विभक्त करती है। कोर को दो उपभागों में विभक्त किया जाता है:

(1)बाह्य कोर (2)आंतरिक कोर

- बाह्य कोर का विस्तार 2900 किमी. की गहराई से 5150 किमी. तक है जिसका औसत घनत्व 10 g/cm है। बाह्य कोर संभवतः पूरी तरह से तरल या अर्द्ध-तरल अवस्था में है। S तरंगें, गुटेनबर्ग असम्बद्धता पर विलुप्त हो जाती है।
- आन्तरिक कोर ठोस अवस्था में है, जिसका विस्तार 5150 किमी की गहराई से पृथ्वी के केंद्र (6378 किमी गहराई) तक है। P-तरंगों की गति बाह्य और आतंरिक कोर की सीमा पर बढ़ जाती है। यहाँ कोर का घनत्व 12-13 g/cm3 के बीच है। कोर पृथ्वी के समस्त आयतन का 16% और द्रव्यमान का 32% है। कोर मुख्य रूप से लोहे और निकेल जैसे भारी धातुओं से बना है। इसलिए इस हिस्से को निफे (NIFE = Nickel + Ferrous) कहा जाता है। इसे बैरीस्फीयर भी कहा जाता है।

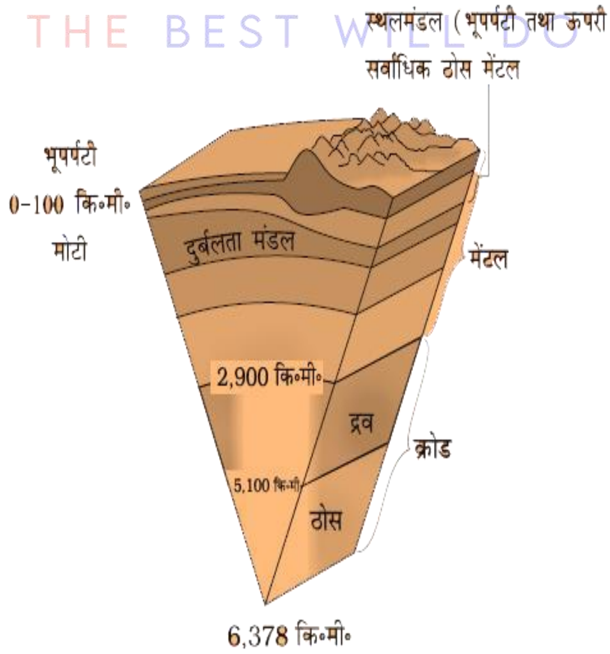

उच्च तापमान के पश्चात् भी आतंरिक कोर ठोस अवस्था में कैसे रह पाता है?

- पृथ्वी का केंद्र अत्यधिक तप्त है और इसका तापमान सूर्य की तुलना में भी अधिक है। ऐसे में सैद्धांतिक रूप से इतने उच्च तापमान पर पदार्थ गैस और तरल अवस्था में मौजूद होते हैं, लेकिन पृथ्वी का आतंरिक कोर ठोस अवस्था में है।

- वैज्ञानिकों का मानना है कि ऐसा पृथ्वी के केंद्र में लोहे के क्रिस्टलीय बॉल' जैसी परमाण्विक संरचना के कारण हो सकता है, जिसके कारण उच्च तापमान और दबाव के बावजूद आतंरिक कोर ठोस बना रहता है।
- KTH रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के अनुसंधानकर्ताओं ने पृथ्वी की सतह से लगभग 6,400 किलोमीटर नीचे पृथ्वी के केंद्र में होने वाली वायुमंडलीय प्रक्रियाओं के समान स्थिति निर्मित करने हेतु ट्रियोलिथ (स्विडिश सुपर कंप्यूटर) का प्रयोग किया।
- धातुओं की परमाण्विक संरचना तापमान और दबाव के साथ परिवर्तित होती रहती हैं। सामान्य तापमान और दाब पर लोहा बॉडी सेंटर्ड क्यूबिक (BCC) अवस्था में रहता है, लेकिन जब उच्च दबाब की स्थिति में यह एक हेक्सागोनल क्लोज्ड पैक्ड (HCP) अवस्था में चला जाता है।
- यह अब तक माना जाता है कि पृथ्वी के केंद्र के भीतर BCC अवस्था के अस्तित्व के लिए स्थिति बहुत अस्थिर थी और कोर में स्थित लोहा HCP अवस्था में पाया जाता है लेकिन नए शोध के अनुसार, केंद्र का अधिक ताप BCC अवस्था को परिवर्तित नहीं करता है अपितु उसको और अधिक मजबूत करता है।
- आंतरिक कोर की संरचना में 96 प्रतिशत के लगभग शुद्ध लोहा तथा शेष भाग निकल तथा कुछ अन्य धातुओं से निर्मित होता है। आंतरिक कोर जैसी अवस्थिति में BCC अवस्था में लोहा के परमाणु 'परमाण्विक विसरण' की प्रक्रिया दर्शाते हैं, इस कारण यद्यपि क्रिस्टल संरचना तो भंग हो जाती है लेकिन लोहे की BCC अवस्था बनी रहती है।
- 'परमाण्विक विसरण' में आतंरिक कोर के किनारों पर अत्यधिक उच्च दबाव के कारण क्रिस्टल संरचना के टुकड़े अपने मूल विन्यास में पुनप्रवेश के लिए लगातार पिघलते और प्रसारित होते रहते हैं। यह ऊर्जा वितरण चक्र (एनर्जी डिस्ट्रीब्यूशन साईकल) क्रिस्टल को स्थिर और कोर को ठोस बनाये रखता है।

<u>पृथ्वी के कोर में जेट स्ट्रीम</u>

- यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) के स्वार्म उपग्रहों ने पृथ्वी के आतंरिक भाग के बाह्य कोर में जेट स्ट्रीम की उपस्थिति की खोज की है। स्वार्म उपग्रह (Swarm satellites) पृथ्वी के कोर, पर्पटी, महासागरों, मैंटल, आयनमंडल और चुम्बकीय मंडल (magnetosphere) के कारण उत्पन्न विभिन्न चुंबकीय क्षेत्रों का आकलन और निगरानी करते हैं।
- यह जेट स्ट्रीम पिघले हुए लोहे के त्वरणशील बैंड की तरह है, जो उत्तरी ध्रुव के चक्कर लगाती है। यह वायुमंडल में बहने वाली जेट स्ट्रीम के समान होती है।
- इस खोज से वैज्ञानिकों को पृथ्वी के आंतरिक भाग की प्रक्रियाओं के बारे में और अधिक समझने में मदद मिलेगी तथा भूकंप एवं ज्वालामुखी जैसी घटनाओं के गहन शोध में भी मदद मिलेगी।
- यह पूर्व में सम्पन्न एक अनुसंधान को प्रमाणित करती है जिसमें यह खोज की गयी थी कि उत्तरी गोलार्द्ध में विशेष रूप से अलास्का और साइबेरिया के नीचे बाह्य कोर में लोहा (iron) तुलनात्मक रूप से तीव्रता से गतिशील है।

❖ **<u>पृथ्वी की आतंरिक संरचना का संक्षेप में विवरण</u>**

परत	सापेक्षिक अवस्थिति	घनत्व	रासायनिक संगठन
क्रस्ट	• सबसे बाह्य परत 50 से 70 किमी. की गहराई तक विस्तृत महाद्वीपों के निचे अधिक मोटी, क्रस्ट एवं ऊपरी मैंटल को सम्मिलित रूप से लिथोस्फेयर कहा जाता है।	• न्यूनतम घनत्व, महासागरीय (बेसाल्ट) महाद्वीपीय क्रस्ट (ग्रेनाइट) की तुलना में अधिक घनत्व वाला है। 2.75 - $2.90 g/cm^3$	• इसके अंतर्गत हल्के तत्व Si, O, Al, Ca, K, Na, आदि शामिल हैं। फेल्डस्पर सामान्य रूप से पाया जाने वाला खनिज है।
मेंटल	• मध्यवर्ती परत तथा सबसे मोटी परत, उपरी भाग एसथेनोस्फेयर कहा जाता है। ऊपरी मैंटल (मोहो से 410 किमी तक) | मध्यवर्ती क्षेत्र (410 से 660 किमी) आन्तरिक मैंटल (660 से 2891 किमी)	• गहराई बढ़ने के साथ आरोपित दबाव में वृद्धि से घनत्व में वृद्धि होती है। 3.4-$5.6 g/cm^3$	• यह क्रस्ट के समान ही सिलिकन और ऑक्सीजन से बना हुआ है लेकिन | इसमें लोहा और मैंग्नेशियम की प्रधानता है। • इसमें ओलीवाइन और पाइरॉक्सीन प्रचुर मात्रा में मिलता है। • कुछ सीमा तक ठोस और कुछ सीमा तक प्लास्टिक के गुण। • गलनांक बिंदु के पास इसका व्यवहार भारी ठोस पदार्थ की तरह होता है।

कोर	• बैरीस्फीयर या आतंरिक परत। (2900- 5150 किमी. बाह्य कोर) तथा (5150 से 6378 किमी. आतंरिक कोर)	• भारी धात्विक तत्वों से निर्मित, अधिकतम घनत्व युक्त परत 5.10 - 13.00g/cm³	• निफे (NIFE) तरल या प्लास्टिक अवस्था में लेकिन अत्यधिक ऊपरी • दबाव के कारण कठोर

पृथ्वी की आंतरिक संरचना के बारे में विभिन्न परिकल्पनाएं

स्वेस की परिकल्पना

स्वेस (1835-1909) नामक भूगर्भशास्त्री ने पृथ्वी के रासायनिक संगठन के आधार पर पृथ्वी की उपरी परतदार चट्टानों के नीचे तीन परतों की स्थिति का उल्लेख किया है, ये हैं- सियाल, सीमा, निफे।

सियाल- अवसादी शैलों के नीचे सियाल की परत पायी जाती है। इसकी रचना सिलिका (si-Silica) एवं एल्युमिनियम (al-Aluminium) से हुई है। इसकी औसत गहराई 50-300 कि.मी. तथा घनत्व 2.75 से 2.90 तक है। सियाल में पोटेशीयम, सोडियम एवं एल्युमिनियम के सिलिकेट अधिक हैं। महाद्वीपों का निर्माण सियाल से ही हुआ है।

सीमा- यह सियाल के नीचे की परत है। इसमें सिलिका और मेगनीशियम (si-ma) की अधिकता पायी जाती है। इसकी गहराई 1000 से 2000 कि.मी. तक है। इस परत का घनत्व 2.90 से 4.75 है। इसमें क्षारीय अंश की प्रधानता पायी जाती है।

निफे- यह सीमा के नीचे की परत है। इसमें निकेल (Nickle-Ne) एवं लोहा (Ferrous-fe) की प्रधानता पायी जाती है। इस परत का घनत्व 11 से 13 होता है। पृथ्वी के आंतरिक कोर में लोहे की उपस्थिति पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति को प्रमाणित करती है।

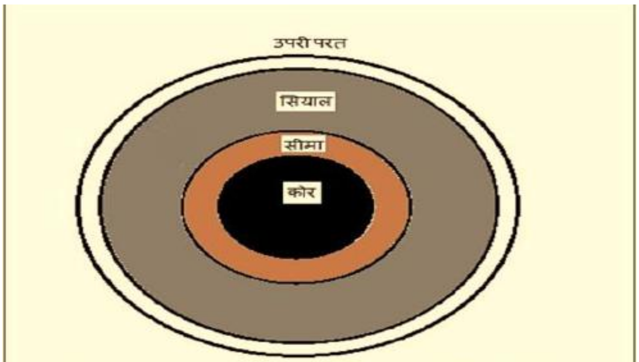

स्वेस के अनुसार पृथ्वी की आन्तरिक संरचना

डेली की परिकल्पना

डेली ने तीन स्तरों को मान्यता प्रदान की है-

बाहरी परत- यह सिलीकेट से निर्मित है। इसका घनत्व 3 तथा इसकी मोटाई 1600 कि.मी. है।

मध्यवर्ती परत- यह लौहे एवं सिलीकेट से निर्मित है। इसका घनत्व 4.5 से 9 तथा इसकी मोटाई 1280 कि.मी. है।

केंद्रीय क्षेत्र- यह लौह पदार्थ से बनी है। इसका घनत्व 16 एवं मोटाई 7040 कि.मी. है।

हेराल्ड जेफ्री परिकल्पना

हेराल्ड जेफ्री द्वारा 4 परतों को मान्यता दी गयी है-

1. बाहरी या अवसादी परत
2. ग्रेनाईट परत
3. थैकीलाइट या डायोराइट परत
4. ड्यूनाईट, पिरीडोटाइट या इक्लोजाईट परत

भूवैज्ञानिक समय सारणी

पृथ्वी का निर्माण आज से करीब 450 करोड़ वर्ष पूर्व हुआ। तब से लेकर आज तक के इतिहास में पृथ्वी पर अनेकों क्रमिक परिवर्तन हुए, इन क्रमिक परिवर्तनों के समय सीमा युक्त अध्ययन को भूवैज्ञानिक समय सारणी कहते हैं। अथवा पृथ्वी के इतिहास की घटनाओं का कैलेंडर भूवैज्ञानिक समय सारणी कहलाता है।

पृथ्वी के सम्पूर्ण जीवन काल को 5 महाकल्पों(era) का 4 युगों (epoch) तथा 16 कल्पों (period) में वर्गीकृत किया गया।

कल्प (Era)	युग (Epoch)	शक (Period)	कल्प के प्रारम्भ होने का समय
1. एजोइक		1. प्रीकेम्ब्रियन या एलोगोनिकन 2. आर्कियन	

अभिसारी गति	अपसारी गति	संरक्षी गति
→←	←→	↑↓
अभिसारी गति में विनाशात्मक किनारों का निर्माण होता है।	अपसारी गति से संरचनात्मक किनारों का निर्माण होता है।	इस गति में चट्टानों का एक – दूसरें के ऊपर घर्षण होता है जैसे – रुपान्ततरित किनारों का निर्माण होता है।
ज्वालामुखी उत्पन्न होती है ।	ज्वालामुखी उत्पन्न होती है ।	इसमें ज्वालामुखी उत्पन्न नहीं होती ।
भूकंप उत्पन्न होता है।	भूकंप उत्पन्न होता है ।	इसमें भूकंप भी उत्पन्न नहीं होता है ।
तथा वलित पर्वतों का निर्माण होता है	तथा इस गति से भ्रंश पर्वतों का निर्माण होता है ।	इससे भ्रंशों का निर्माण होता है ।

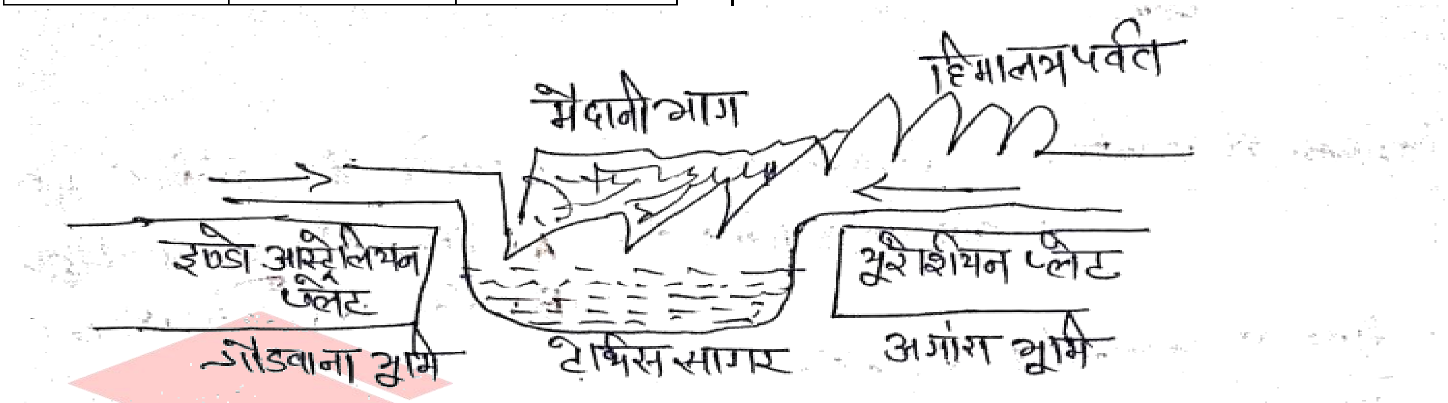

चित्र – पर्वत निर्माण प्रक्रिया

इस सिद्धान्त के अनुसार हिमालय पर्वत यूरोपिन प्लेट तथा इंडो ऑस्ट्रेलियन प्लेट अभिसारी गति से हुआ है। इन प्लेटों के अभिसरण मे टेथिस सागर के अवसादों में वलन पड़ने मे हिमालय पर्वत का निर्माण हुआ हुआ है।

पर्वतों का वर्गीकरण

उत्पत्ति अथवा निर्माण प्रक्रिया के आधार पर

1. चर्नीयिन / प्री कैम्ब्रियन पर्वत
2. कॉलिडोनियन पर्वत
3. हर्सीनियन पर्वत
4. अल्पाइन पर्वत

आयु के आधार पर

1. वलित पर्वत
2. ब्लॉक पर्वत
3. संग्रहित पर्वत
4. अवशिष्ट पर्वत

9. ₹1 के नोट पर किसके हस्ताक्षर होते हैं?

(A) RBI गवर्नर के

(B) वित्त मंत्री के

(C) RBI के डिप्टी गवर्नर के

(D) वित्त सचिव के **(D)**

10.आरबीआई के वह कौन से गवर्नर हैं जो भारत के प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री भी रह चुके हैं?

(A) मनमोहन सिंह

(B) एस. जगन्नाथन

(C) आई.जी. पटेल

(D) एस. वैंकटारमण **(A)**

अध्याय - 4

लोक वित्त

- अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका का अध्ययन लोक वित्त (Public finance) कहलाता है। यह अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो सरकार के आय (revenue) तथा व्यय का आकलन करती है।
- लोक वित्त सरकार में राजस्व जुटाने व खर्च करने का विज्ञान है ।
- डॉ. डाल्टन के अनुसार- ''लोक वित्त उन विषयों में से एक है जो अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र की सीमा रेखा पर स्थित है ।'' इसका संबंध लोक सत्ताओं के आय - व्यय तथा उनके पारस्परिक समायोजन और समन्वय से है ।
- प्रो . सी . एल . बैस्टेल के अनुसार – ''लोक वित्त राज्य की लोक सत्ताओं के आय - व्यय , उनके पारस्परिक संबंध , वित्तीय प्रशासन एवं नियंत्रण का अध्ययन करता समग्रता से लोक वित्त मूल रूप से सरकारों के आय - व्यय से संबंधित है तथा सरकारों का अर्थ केंद्र सरकार राज्य सरकारों तथा स्थानीय सरकारों से है ।''
- वर्तमान में लोक वित्त का क्षेत्र अधिक व्यापक हो गया है इसके अंतर्गत सरकार के आय - व्यय के अतिरिक्त वित्तीय प्रशासन , लेखा निरीक्षण , सार्वजनिक ऋण प्रबंधन एव वित्तीय नियंत्रण आदि कार्यों को भी सम्मिलित किया जाता है ।
- लोक वित्त के विभिन्न पहलुओं की विवेचना इतिहास में भी मिलती है । एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक ' Wealth of Nation ' (1776) के खंड 5 में लोक वित्त के विभिन्न अंगों का विश्लेषण किया है । इस खंड में तीन अध्याय है जो क्रमशः सरकार के व्यय सरकार के राजस्व तथा लोक ऋण का विवेचन करते हैं ।
- लोक वित्त अर्थशास्त्र का वह भाग है जो किसी देश की वित्त व्यवस्था तथा उससे संबंधित प्रशासनिक एवं अन्य समस्याओं का अध्ययन करता है और अंततः इसका उद्देश्य स्थिरता के साथ आर्थिक विकास की गति को बनाए रखना होता है । लोक वित्त के अध्ययन को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है ।

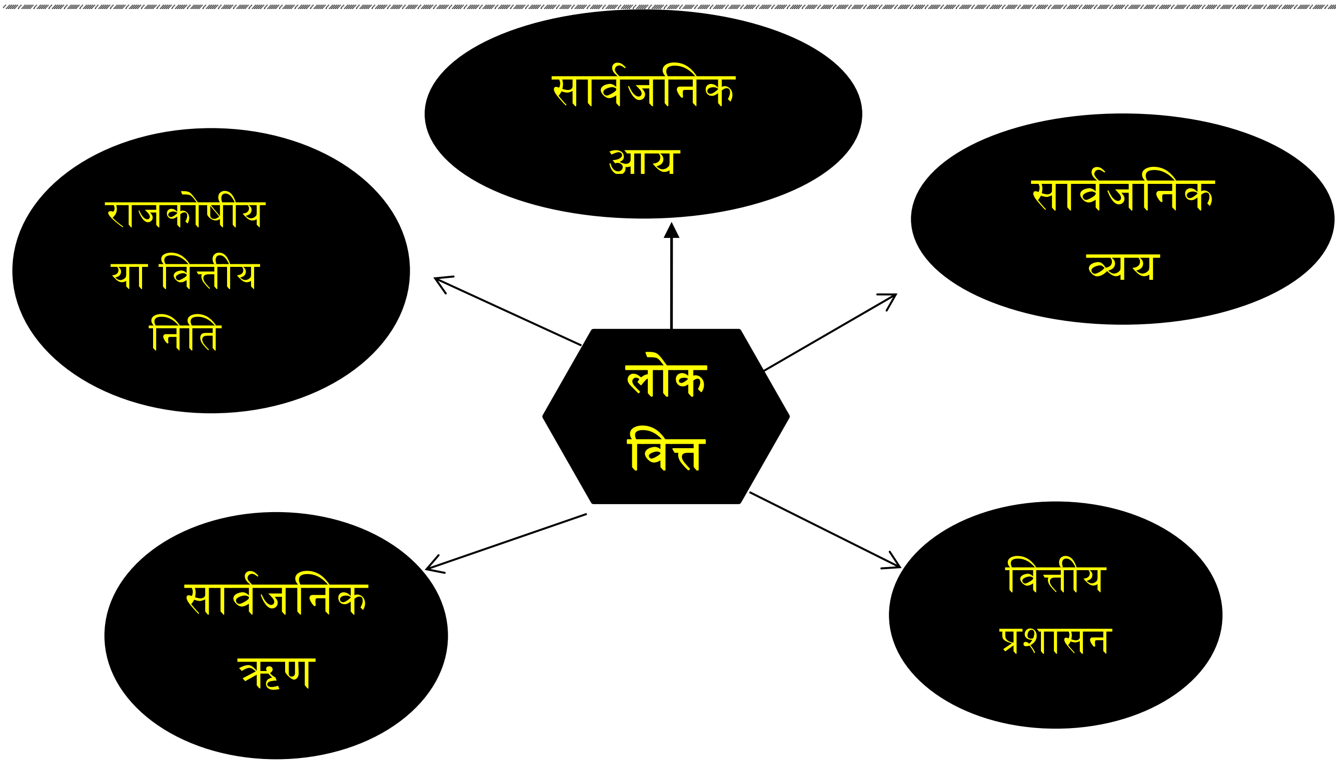

- ***लोक वित्त का महत्व (उद्देश्य) –***
- *अर्थव्यवस्था में संसाधनों (प्राकृतिक व मानवीय) का वितरण ।*
- *लोगों में आय व सम्पत्ति का पुनर्वितरण ।*
- *आर्थिक स्थिरता प्रदान करना ।*
- *आर्थिक विकास हेतु सरकार को आवश्यक खाद्यान्न यथा (पूँजी , उत्पादन) जुटाने में सहायता प्रदान करना।*
- ***लोक वित्त का महत्व (उद्देश्य) –***
- *अर्थव्यवस्था में संसाधनों (प्राकृतिक व मानवीय) का वितरण ।*
- *लोगों में आय व सम्पत्ति का पुनर्वितरण ।*
- *आर्थिक स्थिरता प्रदान करना ।*
- *आर्थिक विकास हेतु सरकार को आवश्यक खाद्यान्न यथा (पूँजी , उत्पादन) जुटाने में सहायता प्रदान करना ।*
- ***अधि तथा न्यून माँग को ठीक करना***
- *अधि तथा न्यून माँग को ठीक करने के लिए निम्न उपाय शामिल होते हैं-*
  (i) राजकोषीय उपाय और
  (ii) मौद्रिक उपाय ।
- *राजकोषीय उपायों का सम्बन्ध सरकार की राजकोषीय नीति और मौद्रिक उपायों का संबंध सरकार की मौद्रिक नीति से होता है ।*

- ***राजकोषीय नीति (Fiscal Policy)***
- *इससे अधिप्राय अधि तथा न्यून माँग को ठीक करने के लिए सरकार की आय और व्यय नीति (या बजट नीति) से होता है ।*
- *राजकोषीय नीति के घटक एवं इनके प्रयोग करने की विधि*

(A) सरकारी व्यय (Government Expenditure) = *एक देश की सरकार विभिन्न प्रकार के व्यय करती है , ये मुख्यतः निम्नलिखित प्रकार के हैं रही है . ये मुख्यतः*

1. *सार्वजनिक निर्माण जैसे - सड़कें , बाघ , पुल आदि पर किया जाने वाला व्यय ।*
2. *सार्वजनिक कल्याण के कार्यों जैसे- शिक्षा , जन - स्वास्थ्य आदि पर किया जाने वाला व्यय ।*
3. *देश की सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था आदि पर किया जाने वाला व्यय ।*
4. *उत्पादकों को उत्पादन बढाने के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता (Subsidies) ।*

- *इन सरकारी खर्च में से किसी एक में या सभी में परिवर्तन करके सरकार अधि माँग या न्यून माँग को ठीक करने का उपाय करती है ।*
- *जब अधि माँग होती है तब सरकारी व्यय कम कर दिया जाता है और जब न्यून माँग होती है, सरकारी व्यय बढ़ा दिया जाता है ।*

(B) कर (Taxes) –

- *कर एक आवश्यक भुगतान है जो पारिवारिक तथा उत्पादक क्षेत्रों द्वारा सरकार को दिया जाता है ।*
- *परिवारों तथा उत्पादकों पर कर - भार को बढ़ाकर सरकार अर्थव्यवस्था में क्रय - शक्ति को कम करती है । इसके विपरीत , कर- भार को कम करकेक , सरकार क्रय - शक्ति को बढ़ाती है । अतः जब न्यून माँग का सामना को ठीक करना होता है तब परिवारों तथा उत्पादकों कर कर - भार बढ़ा दिया जाता है ।*

(C) सार्वजनिक उधार / सार्वजनिक ऋण

- जनता से उधार लेकर सरकार सार्वजनिक ऋण का निर्माण करती है । न्यून माँग की स्थिति में सरकार जनता ।। से ऋण लेना कम कर देती है , ताकि लोगों के पास अधिक तरलता (या नकद शेष) बच जाए और समग्र व्यय ऊँचा बना रहे । इसके विपरित जब अधि माँग की स्थिति होती है तब ब्याज की आकर्षक दर प्रदान करके सरकार सार्वजनिक ऋण को बढा देती है ।

(D) घाटे की वित्त व्यवस्था –

- भारत में , घाटे की वित्त व्यवस्था से अभिप्राय सरकार द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) से
- उधार लेने से है । भारतीय रिजर्व बैंक , अधिक मुद्रा या करेंसी जारी करके मुद्रा उधार देता है । अतिरिक्त मुद्रा / करेंसी जारी के कारण अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त क्रय शक्ति आती है । यह समग्र माँग को बढ़ाता है , जैसा न्यून माँग को ठीक करने के लिए चाहिए होता है । परन्तु अधि माँग की स्थिति में घाटे की वित्त व्यवस्था से , जहाँ तक सम्भव हो, बचने का प्रयास किया जाता है ।

भारत में राजकोषीय उत्तरदायित्व

- ➢ राजकोषीय उत्तरदायित्व से आशय वित्तीय घाटे (Fiscal Deficit) को सन्तुलित करने की प्रक्रिया से है ।
- ➢ भारत में राजकोषीय सन्तुलन स्वेच्छा से नहीं अपनाया गया । इसी कारण भारत में राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंध के लिए कानूनी व्यवस्था की गई ।

वित्तीय घाटा-

- जब सरकार का व्यय उसकी आय प्राप्ति से अधिक हो जाता है , तो सरकार इस घाटे को पूरा करने के लिए जिस व्यवस्था का सहारा लेती है , उसे घाटे की वित्त व्यवस्था कहते हैं ।
- भारतीय दृष्टिकोण में घाटे की वित्त व्यवस्था में निम्नांकित तीन उपाय सम्मिलित किए जाते हैं-

(i) केन्द्रीय बैंक से उधार लेकर अर्थात् नई मुद्रा का सृजन करवा कर

(ii) संचित नगद बकाया को खेतों से निकाल कर ।

(iii) सरकार द्वारा नई मुद्रा एवं सिक्के जारी करके ।

वित्त घाटों के आकलन

- ➢ वित्त घाटों के आकलन के अन्तर्गत निम्नलिखित घाटो की व्याख्या होती है
- ➢ **पूँजीगत घाटा**
- सरकार की पूँजीगत प्राप्तियों एवं पूँजीगत व्यय के अन्तर को पूँजीगत घाटा (Capital Deficit) कहते हैं । इसका तात्पर्य यह है कि सरकार का पूँजीगत व्यय पूँजीगत प्राप्तियों से अधिक है एवं इसकी पूर्ति राजस्व खाते के अधिशेष के जरिए हो रही किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत है ।

- ➢ **चालू खाता एवं राजकोषीय घाटा**
- अर्थव्यवस्था द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं के दृश्य तथा अदृश्य अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारों को प्रदर्शित करने वाले खाते को चालू खाता कहते हैं । इसके शेष को चालू खाता घाटा (Current Account Deficit) कहते हैं। राजकोषीय घाटा तथा चालू खाता घाटा अर्थव्यवस्था को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं ।
- राजकोषीय नीति का आरम्भ वर्ष 1936 से माना जाता है। अब लॉर्ड कीन्स ने सार्वजनिक व्यय की भूमिका पर बल दिया था।
- बजटरी घाटा शून्य हो तो मौद्रिकृत घाटा इस बात पर निर्भर करेगा कि सार्वजनिक ऋण में RBI की धारिता कितनी है।
- कोई भी देश बिना अशोधन (दिवालिया) हुए , जितने व्यय की संभाव्य क्षमता रखता है तथा वास्तव में जितना व्यय करता है , दोनों का अन्तर फिस्कल स्पेस कहलाता है।

राजकोषीय उत्तरदायित्व बिल प्रबंधन एक्ट-2003 (FRBM Act-2003)

- ➢ राजकोषीय समेकन (सुदृढ़ीकरण) तथा सार्वजनिक व्यय प्रबंधन की दिशा में राजकोषीय उत्तरदायित्व बिल प्रबंधन एक्ट-2003 एक अत्यन्त ही प्रभावी कदम है ।
- ➢ राजकोषीय समेकन तथा सरकार के राजस्व प्रबंधन को सनमुन्नत करने के उद्देश्य से सरकार ने ई.ए.एस. शर्मा की अध्यक्षता में राजकोषीय उत्तरदायित्व विधि निर्माण के लिए जनवरी, 2000 में समिति गठित की।
- ➢ जिसका उद्देश्य राजकोषीय प्रणाली के वित्तीय पहलुओं का परीक्षण करना तथा राजकोषीय दायित्व के संबंध में कानून (विधि) के प्रारूप के सम्बंध में संस्तुति करना था पर अन्तिम रूप में राजकोषीय पारदर्शिता पर निर्मित अलहूवालिया कमेटी की रिपोर्ट (2001) इसका आधार बनी ।
- ➢ Fiscal Responsibility and Budget Management (FRBM) बिल दिसम्बर , 2000 में संसद में रखा गया तथा कुछ सुधार के बाद 26 अगस्त , 2003 को FRBM एक्ट के रूप में पारित हुआ तथा 5 जुलाई , 2004 को FRBM नियम के साथ अधिसूचित किया गया ।
- ➢ **FRBM एक्ट की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं**
- केन्द्र सरकार राजकोषीय घाटा तथा राजस्व घाटे को कम करने के लिए उचित कदम उठाए , जिससे राजस्व घाटा 31 मार्च , 2008 तक समाप्त हो जाए तथा उसके बाद पर्याप्त राजस्व आधिक्य सृजित हो सके ।
- एक्ट के अन्तर्गत उन नियमों को बनाना , जो राजकोषीय घाटा राजस्व घाटा, आकस्मिक देयताएँ (Liabilities) तथा कुल देयताओं में कमी लाने के संबंध में वार्षिक लक्ष्य निर्धारित कर सकें । राजस्व घाटा तथा राजकोषीय घाटा इन नियमों में निर्दिष्ट लक्ष्यों का तभी अतिक्रमण कर सकते हैं , जबकि केन्द्र सरकार द्वारा निर्दिष्ट कोई राष्ट्रीय सुरक्षा या राष्ट्रीय संकट की स्थिति हो ।

अध्याय – 20

औद्योगिक क्षेत्र की प्रवृत्तियां

औद्योगिक नीति का अर्थ

औद्योगिक नीति से तात्पर्य सरकार के उस चिंतन से है, जिसके अंतर्गत औद्योगिक विकास का स्वरूप निश्चित किया जाता है तथा जिसको प्राप्त करने के लिए नियम व सिद्धान्तों को लागू किया जाता है। औद्योगिक नीति एक व्यापक धारणा है, जिसमें दो तत्त्वों का मिश्रण होता है।

- औद्योगिक विकास एवं संरचना के सम्बन्ध में सरकार का दृष्टिकोण अथवा दर्शन क्या रहेगा ?
- इस दृष्टिकोण की प्राप्ति के लिए, औद्योगिक इकाइयों को नियन्त्रित एवं नियमित करने की दृष्टि से किन सिद्धान्तों, प्रक्रियाओं, नियमों और नियमनों को अपनाया जायेगा ?

औद्योगिक नीति में उन सभी सिद्धान्तों, नियमों व रीतियों का विवरण होता है, जिन्हें उद्योगों के विकास के लिए अपनाया जाना है। यह नीति विशेष रूप से भावी उद्योगों के विकास, प्रबंध व स्थापना से सम्बन्धित होती हैं। इस नीति को बनाते समय देश का आर्थिक ढाँचा, सामाजिक व्यवस्था, उपलब्ध प्राकृतिक व तकनीकी साधन व सरकारी चिंतन का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है।

औद्योगिक नीति का महत्त्व

किसी भी राष्ट्र के उचित एवं तीव्र औद्योगिक विकास के लिये सुनिश्चित, सुनियोजित एवं प्रेरणादायक औद्योगिकी नीति की आवश्यकता होती है, क्योंकि पूर्व घोषित औद्योगिक नीति के आधार पर ही कोई राष्ट्र अपने उद्योगों का आवश्यक मार्गदर्शन और निर्देशन कर सकता है। प्रत्येक राष्ट्र के औद्योगिक विकास के लिए औद्योगिक नीति किस प्रकार से महत्त्वपूर्ण होती है :

1. यह देश के औद्योगिक विकास को सुनियोजित कर अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करती है।
2. राष्ट्र को मार्गदर्शन व निर्देशन देती है।
3. सरकार को निश्चित कार्यक्रम बनाने में मदद करती है।
4. जनसाधारण को अपनी निश्चित जीविका का साधन बनाने में सहायता करती है।

भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए औद्योगिक नीति बहुत प्रकार से महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि यहाँ नियोजित अर्थव्यवस्था के माध्यम से औद्योगिक विकास हो रहा है। देश में प्रकृतिक साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं लेकिन उनका उचित विदोहन नहीं हो रहा है। यहाँ प्रति व्यक्ति आय कम होने के कारण पूँजी निर्माण की दर भी कम है तथा उपलब्ध पूँजी सीमित मात्रा में है। अतः आवश्यक है कि उसका उचित प्रयोग किया जाए। देश का संतुलित विकास करने कि लिए संसाधनों को उचित दिशा में प्रवाहित करने कि लिए, उत्पादन बढ़ाने के लिए, वितरण की व्यवस्था सुधारने के लिए, एकाधिकार, संयोजन और अधिकार युक्त हितों को समाप्त करने अथवा नियंत्रित करने के लिए कुछ गिने हुए व्यक्तियों के हाथ में धन अथवा आर्थिक सत्ता के केन्द्रीकरण को रोकने के लिए, असमताएँ घटाने के लिए, बेरोजगारी की समस्या को हल करने के लिए, विदेशों पर निर्भरता समाप्त करने कि लिए तथा देश को सुरक्षा की दृष्टि से मजबूत बनाने के लिए एक उपयुक्त एवं स्पष्ट औद्योगिक नीति की आवश्यकता होती है। वे क्षेत्र जहाँ व्यक्तिगत उद्यमी पहुँचने में समर्थ नहीं हैं, सार्वजनिक क्षेत्र में रखे जाएँ और सरकार उनका उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले। साथ ही यह भी आवश्यक है कि निजी क्षेत्र का उचित नियंत्रण भी होना चाहिए जिससे कि विकास योजनाएँ ठीक प्रकार से चलती रहे।

भारत में औद्योगिक नीति का विकास

स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले भारत में किसी औद्योगिक नीति की घोषणा कभी नहीं की गई, क्योंकि भारत में ब्रिटिश सरकार का शासन था तथा उनकी नीति ब्रिटेन के हितों से प्रेरित थी और वह भारत में औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन नहीं देना चाहती थी। द्वितीय महायुद्ध के अनुभवों के बाद सरकार ने देश में औद्योगिक नीति की आवश्यकता महसूस की जिसके फलस्वरूप सन् 1944 में नियोजन तथा पुनर्निर्माण (Planning and Reconstruction) विभाग की स्थापना की गयी। इस विभाग के अध्यक्ष सर आर्देशीर दयाल द्वारा 21 अप्रैल 1945 को एक औद्योगिक नीति विवरण पत्र जारी किया गया लेकिन व्यवहार में उसको क्रियान्वित न किया जा सका। ब्रिटिश सरकार ने भारत के औद्योगिक विकास के प्रति उदासीनता की नीति अपनाई और उनका सदैव यह प्रयास रहा कि भारत कच्चे माल का निर्यातिक (Exporter) और निर्मित माल का आयातक (Importer) बना रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में तीव्र आर्थिक विकास के लिए औद्योगिक नीति की घोषणा करना आवश्यक समझा गया। इसके लिए भारत सरकार ने दिसम्बर 1947 में एक 'औद्योगिक सम्मेलन' का अयोजन किया। इस सम्मेलन में यह निष्कर्ष निकला कि भारत सरकार को जल्दी ही एक स्पष्ट औद्योगिक नीति की घोषणा करनी चाहिए। औद्योगिक सम्मेलन की सिफारिश पर भारत सरकार द्वारा 6 अप्रैल, 1948 को तत्कालीन उद्योग एवं पूर्ति मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा मिश्रित अर्थव्यवस्था के आधार पर तैयार की गयी तथा प्रथम औद्योगिक नीति की घोषणा की गई।

पहली औद्योगिक नीति 1948 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा जारी की गई ।

इस नीति से यह निर्धारित हुआ कि भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था के मॉडल को अपनाया जायेगा।

उद्योगों को चार श्रेणियों में बांटा गया -

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/wdvcfu 1 web.- https://bit.ly/40yVhHP

FREE SAMPLE

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE